भण्डारण भारती

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अंक–61

केन्द्रीय भण्डारण निगम

मैं कभी नहीं देखता कि क्या किया जा चुका है,
मैं हमेशा देखता हूँ कि क्या किया जाना बाकी है।

❄ ❄ ❄ ❄ ❄

जो गुजर गया, उसके बारे में मत सोचो और भविष्य के सपने मत देखो, केवल वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करो।

– गौतम बुद्ध

अप्रैल–जून, 2016

मुख्य संरक्षक
हरप्रीत सिंह
प्रबन्ध निदेशक

संरक्षक
जे. एस. कौशल
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता
अनिल कुमार शर्मा
महाप्रबन्धक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

उप-संपादक
रजनी सूद, रेखा दुबे

सहायक संपादक
प्रकाश चन्द्र मैठाणी

संपादन सहयोग
नीलम खुराना, शशि बाला,
विजयपाल सिंह

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया, अगस्त क्रान्ति मार्ग,
हौज खास, नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: **विबा प्रेस प्रा. लि.**, सी-66/3, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110020

भण्डारण भारती

त्रैमासिक पत्रिका **अंक-61**

	विषय	पृष्ठ संख्या
➲	प्रबंध निदेशक की कलम से	03
➲	निदेशक कार्मिक की ओर से	04
➲	संपादकीय	05
	आलेख	
●	सफलता का परिमाण – यास्मीन सैयद	06
●	हम सब एक हैं – रोहित उपाध्याय	07
●	बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ – रेखा दुबे	10
	कविताएं	
●	पवित्रता – मीनाक्षी गुप्ता	09
●	एकलव्य – रजनी सूद	11
●	विदाई समारोह गीत – देवराज सिंह देव	12
●	भगत सिंह – कृष्ण कुमार	19
●	योग – सच्चिदानन्द राय	26
●	खेल का मैदान – शेख मुहम्मद वसीम	28
●	शनि-रवि की छुट्टी – शशि बाला	30
●	पर्यावरण हमें बचाना है! – अरविन्द सनत् कुमार	31
	पर्यटन	
●	प्राकृतिक सौंदर्य का खजाना.... – महिमानन्द भट्ट	20
●	श्री सोमनाथ दर्शन – आई.एम. वर्मा	32
	साहित्यिकी	
❖	नई संस्कृति	16
	कहानी	
◎	लघु कहानियाँ – नम्रता बजाज	13
◎	श्रृद्धा – वीना दुग्गल	27
◎	जो भूले न जाएं रिश्ते – विजयपाल सिंह	29
	विविध	
○	परिपक्वता – सतविंदर सचदेवा	15
○	आभासी जिंदगी – पोस्ट, लाइक .... – मीनाक्षी गंभीर	23
○	अंतर्रात्मा की आवाज – दयानिधी अग्रवाल	26
	अन्य गतिविधियां	
❍	सचित्र गतिविधियां	33
❍	खेल समाचार	40

संपादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण–अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भंडारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भंडारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी०एल०, परामर्शी सेवाएं, मल्टीमॉडल परिवहन आदि के क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्यू चेन की योजना बनाना और उनमें विविधता लाना।
- भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा और उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम बनाना व क्रियान्वित करना।

प्रबंध निदेशक की कलम से...

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका भंडारण भारती का निरंतर प्रकाशन होना निगम के लिए गौरव एवं प्रसन्नता का विषय है और इसी दिशा में इस पत्रिका का 61वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। हमें खुशी है कि यह पत्रिका अपना उद्देश्य पूरा करने में निरंतर सफल हो रही है।

निगम उद्योग, व्यापार, कृषि एवं अन्य क्षेत्रों की भंडारण आवश्यकताओं को पूरा करता है। अपनी व्यापारिक गतिविधियों एवं अन्य कार्यकलापों में वृद्धि लाने के उद्देश्य से निगम ने हाल ही में कारपोरेशन बैंक के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसका उद्देश्य किसानों को वैज्ञानिक भंडारण हेतु उनके उत्पाद को हमारे वेअरहाउसों में जमा करने पर निगम द्वारा जारी नेगोशिएबल वेअरहाउस रसीद को गिरवी रखकर आसानी से वित्त सुविधाएँ प्रदान कराना है। इसके अतिरिक्त, निगम खाद्यान्नों के वैज्ञानिक भंडारण के अलावा सीएफएस, आईसीडी, एलसीएस तथा एसीसी जैसी मूलभूत लॉजिस्टिक सेवाएं भी प्रदान कर रहा है। यह भी अत्यंत खुशी का समाचार है कि आईसीएआई की तरफ से कॉस्ट मैनेजमेंट में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए निगम को फर्स्ट अवॉर्ड फॉर एक्सीलेंस, 2016 से सम्मानित किया गया।

निगम निगमित सामाजिक दायित्व के क्षेत्र में अपने दायित्वों को भली–भांति पूरा कर रहा है। इस योजना के तहत राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम (एनबीसीएफडीसी) को सैन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ प्लास्टिक्स इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलौजी (सीआईपीईटी), मुरथल के माध्यम से पिछड़े वर्ग के उम्मीदवारों को 'मशीन ऑपरेटर प्लास्टिक्स एक्सट्रूशन'' पर प्रशिक्षण देने के लिए निगम ने वित्तीय सहायता प्रदान की है। इसके अतिरिक्त, निगमित कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग अभ्यास भी किया। निगम द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत निगमित कार्यालय में दिनांक 16 अप्रैल, 2016 से 30 अप्रैल, 2016 तक और 16 जून, 2016 से 30 जून, 2016 तक स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया और स्वच्छता की शपथ भी ली गई। इस अवसर पर निगमित कार्यालय में अन्य अनेक कार्यक्रम आयोजित करने के अतिरिक्त रक्तदान शिविर भी लगाया गया। मेरा मानना है कि इस प्रकार के आयोजनों में सभी को सम्मिलित योगदान देना चाहिए तथा स्वच्छता के महत्व को देखते हुए अपने कार्यालय सहित अपने आस–पास को स्वच्छ रखने के इस महत्वपूर्ण कार्य में अपनी अहम भूमिका निभानी चाहिए।

राजभाषा के लक्ष्यों को पूरा करने में निगम पूरी निष्ठा से प्रयासरत है। राजभाषा में कार्य बढ़ाना सभी के लिए गौरव की बात है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सरल हिंदी में सरकारी कामकाज भली–भांति पूरा करने की दिशा में निगमित कार्यालय में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों को कम्प्यूटर पर यूनिकोड, राजभाषा नीति, नियमों एवं अनुवाद जैसे विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा गहन जानकारी प्रदान की गई। इस प्रकार की कार्यशाला का आयोजन करना निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा में अधिकाधिक कार्य करने के लिए पूर्णतया सक्षम बनाना है।

इस पत्रिका में संकलित सामग्री से न केवल हिंदी में काम करने की भावना को बल मिलेगा बल्कि पाठकों को हमारे निगम के कार्यकलापों एवं उद्देश्यों के बारे में भी जानकारी मिलेगी। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका निरंतर अपना स्तर बनाए रखेगी और इसमें प्रकाशित रोचक एवं उपयुक्त सामग्री राजभाषा की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी तथा इसके माध्यम से निगम एक नई पहचान बनाने की दिशा में आगे बढ़ता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित!

¼gjihr flg½
प्रबंध निदेशक

निदेशक (कार्मिक) की ओर से...

किसी भी संगठन के लिए पत्रिका प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य होता है क्योंकि इसमें संगठन की विभिन्न गतिविधियों की झलक प्रस्तुत की जाती है। विगत कई वर्षों से निगम के विभिन्न कार्यकलापों की जानकारी देने सहित राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य से 'भण्डारण भारती' पत्रिका का नियमित प्रकाशन किया जाना प्रसन्नता की बात है। निःसंदेह यह पत्रिका नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने का एक उपयुक्त माध्यम बनती जा रही है। इस पत्रिका में खाद्यान्नों के भंडारण, साहित्यिक और तकनीकी रचनाओं को शामिल करने से इसकी उपयोगिता बढ़ रही है जिसके परिणामास्वरूप कई अवसरों पर यह पत्रिका सम्मानित की जा चुकी है।

निगम खाद्यान्नों के भंडारण सहित किसानों को वैज्ञानिक भंडारण की तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण देने का काम भी करता है और इसके लिए राजभाषा एवं स्थानीय भाषा के प्रयोग पर बल दिया जाता है। इस दृष्टि से भी राजभाषा का प्रयोग बढ़ाना हम सभी के लिए आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य हो जाता है। हमें अपने कार्यालय में सरकारी अपेक्षाओं के अनुसार पूरी निष्ठा के साथ राजभाषा को आगे बढ़ाना है ताकि हम निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर उपलब्धि हासिल कर सकें।

'भण्डारण भारती' पत्रिका के अन्य अंकों की भांति इस अंक में भी रोचक एवं ज्ञानवर्धक विषयों को प्रकाशित किया गया है। मेरा यह मानना है कि इस प्रकार के संकलन से न केवल हिंदी के काम में बढ़ोतरी होगी बल्कि विभिन्न क्षेत्रों की भरपूर जानकारी के साथ काम करने की प्रेरणा भी जागृत होती है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका का स्तर बढ़ाने एवं इसमें अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर सृजनात्मक लेख लिखने के लिए सभी आगे आएंगे ताकि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं उसके विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके।

¼t-, l- dk'ky½
निदेशक (कार्मिक)

संपादकीय

इस पत्रिका के माध्यम से सुधी पाठकों से पुनः संवाद स्थापित करते हुए मुझे प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। निगम की विभिन्न तिमाही गतिविधियों को इस अंक में फोटोग्राफ सहित प्रकाशित किया गया है ताकि निगम तथा इससे जुड़े विभिन्न जन–समुदायों को हमारी व्यापारिक गतिविधियों तथा अन्य कार्यकलापों की पूरी जानकारी मिल सके।

निगम की यह पत्रिका अपना स्थान बनाए रखने में पूर्णतः सफल रही है। इसका श्रेय निगम के उन सृजनात्मक लेखकों को जाता है जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना योगदान दिया है। हमें इस बात की भी खुशी है कि इस पत्रिका ने न केवल निगम में बल्कि अन्य संस्थानों में भी अपनी एक अलग पहचान बनाई है और यह पहचान निरन्तर बढ़ती जा रही है।

हर अंक की भांति इस अंक में भी स्थाई स्तम्भों को समुचित स्थान दिया गया है। इसके अतिरिक्त इस अंक में पर्यटन विषय को भी शामिल किया गया है। निगम में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रगति के साथ–साथ पत्रिका का स्तर बढ़ाने में भी सभी का सहयोग मिलना आज की अत्यंत आवश्यकता है। भविष्य में इस पत्रिका का स्तर और बढ़े तथा इसमें रोचक सामग्री प्रकाशित हो सके, इसके लिए पाठकों के सुझावों का हम स्वागत करते हैं ताकि उनसे मिले बहुमूल्य सुझावों के अनुरूप इस पत्रिका को और भी बेहतर बनाया जा सके।

¼uerk ctkt½
प्रबंधक (राजभाषा)

सफलता का परिमाण

* यास्मीन सैयद

हमारे जीवन में एक चीज ऐसी है जो समस्त प्राणियों को उनके जीवंत होने का एहसास कराती है और

जो सभी अवसरों के लिए खदान (खान) है – 'जिम्मेदारी'। ऐसा होने के बावजूद औसतन लोगों का इसके साथ प्रतिकर्षण का भाव रहता है। असल में हमारी जिम्मेदारियां ही हमारी मुश्किलें हैं और ये मुश्किलें ही जिम्मेदारियों की अभिव्यक्ति है। मुश्किलों का समाधान है – उनका सामना करना। यही बात जिम्मेदारी के परिपेक्ष्य में उसे निभाने से जुड़ी है।

जीवन की उपलब्धि इस बात में है कि हम किस तरह इन जिम्मेदारियों का निर्वाहन करते हैं।

जब तक उदर में भूख का भाव है, तब तक हमें इसके निष्पादन के लिए भोजन की उपलब्धता बनाए रखनी होगी। जिम्मेदारियां और मुश्किलें ही जीवन का मूल हैं। यदि हमें कभी, कोई भी या किसी भी प्रकार का अभाव प्रभावित करता है तो वह जिम्मेदारी का उद्‌भव है, और इस अभाव के प्रलोभन की जननी मानवीय आंकाक्षाएं हैं, जो दिन–दूनी रात चौगुनी रफ्तार से अनंत के मार्ग पर प्रशस्त है।

समय रहते न सही, समय के साथ–साथ निभाते हुए इन 'आकांक्षाओं' की पूर्ति ही हमारी उपलब्धि है। इन आकांक्षाओं का पूर्तिकरण ही जिम्मेदारियों का निर्वाहन करना है। महत्ता इस बात की है कि आप बच निकलने में विश्वास रखते हैं या अपनी सूझबूझ और होश–ओ–हवाश न गंवाते हुए इनकी पूर्ति करते हैं।

एक और चीज जो आपके और किसी दूसरे व्यक्ति की उपलब्धि का दायरा निर्धारित करती है, आम भाषा में उसकी परिभाषा ''संसाधनों की उपलब्धता'' है।

हाँ, इस बात में कोई दो राय नहीं है कि ''बड़ा आदमी'' बनने में संसाधनों की उपलब्धता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, मगर इनका उचित उपयोग उचित तरीके से, अविवेकी हुए बिना करना ही, इनका मील का पत्थर होना साबित करता है।

मगर महान व्यक्तियों की उपलब्धियां कार्य–कौशल तथा श्रम साध्यता पर निर्भर करती है। इनका संसाधनों की उपलब्धता से मीलों तक कोई औचित्य नहीं है। संसाधनों की उपलब्धता का हवाला देकर अपनी लापरवाही या अयोग्यता की असफलता का जामा पहनाना सरासर निकृष्टता है। जिन लोगों ने ससांधनो के बलबूते सफलता के परचम लहराए हैं, उनकी उपलब्धि निरी भौतिकता है।

परन्तु इस बात से उनकी सफलता को कम आंका जाना तो अन्याय है, क्योंकि 'महान' शब्द की अभिव्यक्ति आकांक्षाओं से परे होती है। जो लोग अपने आप को 'सफल' लोगों की पक्तिं में अग्रिम स्थान पर देखना चाहते हैं, उनके लिए उस स्तर पर किए गए प्रयत्नों का उचित मूल्यांकन, पहली चुनौती है।

जिन्हें उपलब्धियों की भूख है तथा साथ ही वे लोग जो इस बात की इच्छा रखते हैं कि सफलता उनके कदम चूमे तो आवश्यकता इस बात की है कि वे आकांक्षाओं की भट्‌टी में जी–तोड़ मेहनत का कोयला भर दें और संयम के साथ समय की धीमी आंच पर अपने प्रयत्नों को परिपक्व होने दें। यही बात 'सफलता' और 'महानता' के बीच के परिमाण को सही रूप से आंकने के लिए प्रारब्ध को विवश कर देगी।

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (लेखा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

हम सब एक हैं

* रोहित उपाध्याय

बचपन में हम सब यही सुनते–सुनते बड़े होते हैं कि एकता में बहुत शक्ति होती है। बच्चों को एक कहानी भी पढ़ाई जाती है, जिसमें एक बूढ़ा अपने बच्चों को कुछ लकड़ियाँ बाँध कर देता है और तोड़ने के लिए कहता है, जब वे नहीं तोड़ पाते तो वह लकड़ियों के गट्ठर को खोल कर उन्हें एक–एक लकड़ी तोड़ने को कहता है। इस काम को वे आसानी से कर लेते हैं। इस प्रकार वह उन्हें समझाने में सफल रहता है कि यदि वे भी लकड़ियों के गट्ठर की तरह मिल कर एक साथ रहेंगे तो कोई भी उन्हें पराजित नहीं कर पाएगा। इस एक कहानी के अलावा हमें यह भी पढ़ाया जाता है कि भारत अनेकता में एकता वाला देश है।

पद्मश्री पंडित विनय चंद्र मौद्गल्य द्वारा रचित यह गीत अत्यंत प्रसिद्ध हुआ है –

"हिंद देश के निवासी सभी जन एक हैं, रंग रूप वेशभूषा चाहे अनेक हैं।"

बचपन में दूरदर्शन पर बार–बार दिखाया जानेवाला यह गीत मन में एक रोमांच–सा भर देता था। इस गीत को 'एक, अनेक और एकता' नाम से एक एनिमेशन फिल्म के रूप में फिल्माया गया था। इसे सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। लगभग 7 मिनट की यह फिल्म मेरी उम्र के बच्चों में बहुत लोकप्रिय थी। इसकी धुन और भावना इतनी अच्छी थी कि हम सब अक्सर इसे गुनगुनाते रहते थे। इस फिल्म को जापान द्वारा भी सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म का पुरस्कार दिया गया।

स्कूलों में सिखाया जाने वाला गीत 'सारे जहाँ से अच्छा, हिंदोस्तां हमारा' भी देशभक्ति का पाठ पढ़ाता है। इसकी एक पंक्ति है – 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना, हिंदी हैं हम, वतन हैं, हिंदोस्तां हमारा।' यह गीत सभी धर्मों के लोगों को एक होकर रहने का संदेश देता है। बचपन में तो यह भावना बहुत अच्छी लगती है, परंतु बड़े होने पर वास्तविकता इसके ठीक विपरीत दिखाई देती है। एक मजहब के लोग ही एक साथ मिलकर काम नहीं करते तो कैसे उम्मीद की जाए कि वे दूसरे मजहब के लोगों के साथ मिलकर काम करेंगे? विभिन्न धर्म कैसे अलग–अलग संप्रदायों या पंथों में बंटे हुए हैं, आप स्वयं देखिए –

मुस्लिम – शिया और सुन्नी

जैन – श्वेतांबर और दिगंबर

ईसाई – प्रोटेस्टैंट और कैथोलिक

बौद्ध – महायान और हीनयान

सिख – नामधारी, निरंकारी, उदासी, राधास्वामी आदि

हिंदू धर्म के बारे में बात करें तो एक पूरी पुस्तक लिखी जा सकती है। कुछ लोग तो हिंदू धर्म को एक मजहब मानते ही नहीं, क्योंकि अन्य धर्मों की तरह हिंदू होने के लिए केवल आपका हिंदू परिवार में पैदा होना ही पर्याप्त है। हिंदू धर्म में इतने देवी देवता हैं कि एक ही परिवार में माँ एक देवता की पूजा करती है, पिता दूसरे की, तो बेटा किसी भगवान को मानता ही नहीं। आप जीवन में चाहे कभी मंदिर न गए हों, पर समाज में आपकी पहचान एक हिंदू के रूप में ही रहेगी। हिंदू समाज केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में ही नहीं बँटा है, बल्कि उपर्युक्त चारों वर्ग भी कई जातियों, उपजातियों, गोत्रों और उपगोत्रों में बंटे हुए हैं। इन वर्गों में भी अपने को उच्च कुल का और उसी वर्ग की दूसरी उपजातियों को नीचा समझनेवाले लोग मौजूद हैं। इन सबको देखने, समझने के बाद समझ में नहीं आता कि कैसे कहूँ कि 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना'?

भारत का विभाजन 1947 में मजहब के आधार पर ही हुआ था, लेकिन अगर मजहब ही एकता का आधार

* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, नवीं मुम्बई

होता तो पाकिस्तान और बांग्लादेश कभी अलग नहीं होते। पाकिस्तान के अंदर ही पख्तूनों और बलूचियों से भेदभाव नहीं हो रहा होता। यह शायद कश्मीर को पाकिस्तान में शामिल करने की मांग करनेवालों को दिखाई नहीं दे रहा होगा। तभी तो पाकिस्तानी क्रिकेट टीम जब मैच जीतती है तो कश्मीर में पाकिस्तानी झंडे फहराए जाते हैं। यदि देश के अन्य भागों की बात करें तो मुझे लगता है कि हमारा पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान ही भारत को एकता के सूत्र में पिरोता है। पूरा देश तभी एक दिखाई देता है जब पाकिस्तान के विरुद्ध क्रिकेट या हॉकी का मैच हो। कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से अरुणाचल तक पाकिस्तान के खिलाफ ही एक राय दिखाई देती है। केवल इसी समय देशभक्ति का जुनून देशवासियों के मन में हिलोरें मार रहा होता है और यह अहसास दिलाता है कि हम सब एक देश के नागरिक हैं।

यदि आपको लगता है कि भाषा के आधार पर हम सब एक हैं तो यह बात भी गलत सिद्ध हो जाती है। सर्वप्रथम सन् 1953 में भारत सरकार को तेलगु भाषी लोगों के आंदोलन के बाद दबाव में आंध्र प्रदेश की स्थापना करनी पड़ी। बाद में पूरे देश में इसी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन आयोग की सिफारिश पर 1 नवम्बर, 1956 को 14 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों की स्थापना की गई। लेकिन भाषा भी इन प्रदेशों में एकता स्थापित नहीं कर पायी।

उत्तरप्रदेश से उत्तराखंड, मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़, बिहार से झारखंड सन् 2000 में ही अलग हो गए थे। भाषाई आधार पर सबसे पहले पुनर्गठित आंध्रप्रदेश के लोग भी भाषा के आधार पर एक नहीं रह सके, परिणामस्वरूप, 2 जून, 2014 को आंध्रप्रदेश से अलग होकर भारत के 29वें राज्य के रूप में तेलंगाना ने जन्म लिया। उत्तरप्रदेश में जहाँ अलग बुंदेलखंड और हरित प्रदेश की मांग जोर पकड़ रही है, वहीं महाराष्ट्र की मराठी भाषा होने के बावजूद पृथक विदर्भ राज्य की मांग भी समय–समय पर सिर उठाती रहती है। क्या आप अभी भी कहेंगे, हम सब एक हैं ?

रंग–रूप के आधार पर भेदभाव करने में शायद हम सब एक हो सकते हैं। गोरे–काले का भेदभाव जानना है तो शादी के विज्ञापन देखिए। क्या आपने कभी ऐसा विज्ञापन देखा जिसमें किसी ने लिखा हो कि उसे काली या साँवली वधू चाहिए? लड़का भले ही अनपढ़ और काला–कलूटा हो, उसे तो बस गोरी दुल्हन ही चाहिए।

उत्तर भारत में जाने पर दक्षिण भारतीय लोगों को अपने पहनावे, बोली और रंग के आधार पर अपमानित होना पड़ता है, तो दक्षिण भारत में हिंदी बोलने वाले को दोयम दर्जे का समझा जाता है। पूर्वोत्तर भारत के लोगों को तो हम उत्तर भारतीय अपने देश का मानते ही नहीं। छोटी आँखों वाले हमें चीनी या नेपाली दिखाई देते हैं। ईश्वर द्वारा हमें दी गई बड़ी आँखें भी हमें उनका दर्द दिखा नहीं पाती। हमारी यही उपेक्षा और अपने आप को श्रेष्ठ समझने की भावना ही पूरे भारत को एक करने में बाधक बन जाती है। जहाँ उत्तर भारत में रहनेवाले लोगों को दक्षिण भारतीय राज्यों के लोग मद्रासी दिखाई देते हैं, वहीं महाराष्ट्र में हिन्दी बोलने वाले हर व्यक्ति को 'भैया' समझ लिया जाता है। इस सबके बाद भी क्या आप कहेंगे कि हम सब एक हैं?

यदि आपको लगता है कि दक्षिण भारतीय राज्यों तथा उत्तर भारतीय राज्यों में आपस में एकता होगी तो वहाँ भी कावेरी नदी के पानी पर लड़ने वाले कर्नाटक और तमिलनाडु तथा सतलुज–यमुना लिंक नहर के पानी के लिए लड़ने वाले पंजाब व हरियाणा इस आपसी भाईचारे की पोल खोलते दिखाई देते हैं।

मैंने तो यह अनुभव किया है कि केवल हमारा स्वार्थ ही हम सबको एक करता है। सबसे पहले परिवार से ही शुरू करते हैं। देश की एकता को समझने के लिए सबसे पहले हमें इसकी सबसे छोटी इकाई परिवार को समझना होगा। क्या आज आपको कहीं परिवार के नाम पर एकता दिखाई देती है? आज परिवार बिखर रहे हैं, भाई–भाई या भाई–बहन या तो अदालती मुकदमों में उलझे हुए हैं या आपस में बोलचाल ही बंद है। बड़े औद्योगिक घराने हों या गरीब परिवार कोई भी इस बिखराव से अछूता नहीं रहा है। जब तक बच्चों को माता–पिता या भाई–बहन की आवश्यकता होती है, तब तक तो वे एक होकर रहते हैं, जहाँ आवश्यकता समाप्त हुई, वहीं परिवार बिखर जाता है। कॉलेजों में छात्र यूनियनें, छात्रों की तथा कार्यालयों में

यूनियनें कर्मचारियों की भलाई की बातें करती दिखती हैं, लेकिन भला सिर्फ इनके पदाधिकारियों का ही होता है। ट्रांसपोर्ट यूनियन के एक इशारे पर बस, ऑटो या टैक्सी वाले हड़ताल कर देते हैं। टैक्स न देने के लिए देश के सभी सर्राफा व्यापारी एक हो जाते हैं।

आज जहाँ देश का गरीब अपने दो जून के खाने की चिंता में व्यस्त है तो वहीं अमीर व्यक्ति के पास खाने के लिए समय ही नहीं है। फिर वह इस एकता के बारे में कैसे सोचे? ले दे कर बचता है मध्य वर्ग, जिसके कंधों पर वोट देने से लेकर, राजनीति पर और क्रिकेट पर बहस करने की भी जिम्मेदारी है। एक यही वर्ग है जिसने राष्ट्रीय एकता की सारी जिम्मेदारी ले रखी है। लेकिन यह एकता की बातें भी केवल एक दिखावा लगती हैं क्योंकि आज शहरों में इस वर्ग को यह तो पता नहीं है कि उसका पड़ोसी कौन है? लेकिन जब वह आपसे बात करेगा तो आपको लगेगा कि उसे ही देश की सबसे अधिक चिंता है। यह वर्ग अक्सर आपको कभी देश के सूखे के हालात पर तो कभी बाढ़ पर घड़ियाली आँसू बहाता दिखाई देता है।

भारत से बाहर जाने पर ही आपको अपनी राष्ट्रीयता का बोध होता है, जहाँ आप महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश या तमिलनाडु के न होकर भारतीय होते हैं। ऑस्ट्रेलिया या इंग्लैंड के मैदानों पर भारतीय क्रिकेट टीम का हौसला बढ़ाते लोगों को देखकर ही लगता है कि हम भारतवासी एक हैं, वरना देश में तो हम अलग–अलग होकर ही रहते हैं।

'वसुधैव कुटुंबकम' का आह्वान करनेवाला हमारा देश, देश में ही इतने टुकड़ों में बँटा हुआ है कि सोचना पड़ता है कि क्या वाकई हम एक राष्ट्र राज्य हैं? शायद हमारी फितरत ही कुछ ऐसी है कि अपने आप को दूसरे से अलग करने के लिए हम कोई–न–कोई मुद्दा ढूँढ ही लेते हैं। शायद यही अनेकता में एकता है।

पवित्रता

*** मीनाक्षी गुप्ता**

परिभाषा पवित्रता की बदल गई और बदलती जायेगी,
समय के साथ सीता आई, मीरा आई,
आहिल्या आई, राधा आई।
उनकी पवित्रता जग में युगों–युगों चली आई।
आज भी उनकी पवित्रता,
अस्मिता की कसमें दुनिया खाती है।

समय की धूल भरी आंधी पवित्रता ढांक चली गई।
पवित्रता कहां बह गई कोई जान नहीं पाया।।

सूट और साड़ी का स्थान ले लिया
इन स्कर्टों और पेन्टों ने
नारी को जगह–जगह उजागर किया, इन विज्ञापनों ने
हमीं ने खुद ही अपनी पवित्रता, तहज़ीब को खोया है,
इस फैशन परस्ती में, यह तो समय ही दिखायेगा कि
क्या पाया क्या खोया हैं।

आज भी रूह कांप जाती है,
निर्भया के मंजर को याद करके,
सरदी की कांपती रातों में रक्षक ही भक्षक बन बैठा,
पवित्रता को नोंचा और खरोंचा था, न उसे इंसान जाना,
न ही इंसान उसे माना।।

मोमबत्ती जलाकर यूं जागृति तो आ जायेगी,
पवित्रता न आ पायेगी। पवित्रता हो विचारों में,
पवित्रता हो हर नजरों में।
सीता ने अस्मिता को एक तिनके से बचा रखा,
हमें भी ज्ञान का, आचारों और विचारों का
तिनका लगा के साथ रखना है।

नहीं तो पवित्रता के बिना क्या औकात रह ही जायेगी।
पवित्रता बची रही तो ही, नारी भी बच पायेगी।
नारी तभी बच पायेगी, नारी तभी बच पायेगी।।

* प्रधान निजी सचिव, डब्ल्यूडीआरए, नई दिल्ली

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

* रेखा दुबे

स्टार प्लस पर प्रसारित हुए सीरियल **lR;eo t;r** में कन्या भ्रूण हत्या के विषय में जो तथ्य आम जनता तक पहुंचाए गए वो वाकई चौंकाने वाले थे। एक डॉक्टर की दो जुड़वा बेटी थी जिन्हें उनकी अपनी दादी जान से मारने की कोशिश में सीढ़ियों से फेंक देती है। सचमुच ये घटना रूह को कांपने पर मजबूर कर देने वाली थी। हमारे देश में आज तक दादी और नानी को बच्चों को कहानी सुना कर प्यार से गोद में सुलाने के लिए माना जाता है। क्या कोई ऐसा जघन्य अपराध अपने ही खून के साथ कर सकता है ? अभी तक हम इस भ्रम में थे कि कन्या भ्रूण हत्या केवल छोटे गांव या अनपढ़ परिवार में होती आई है। पढ़े–लिखे और महानगरीय परिवार इससे अछूते हैं।

आज देश के सामने विकट समस्या है कि लड़कियों का अनुपात लड़कों की अपेक्षा दिन–प्रतिदिन कम होता जा रहा है। इस दिशा में काम करने के लिए ही गुजरात और मध्य प्रदेश सरकार ने ^^cVh cPkkvk^^ अभियान चलाया था जिसके अनुकूल परिणाम सामने आए हैं। इन दोनों राज्यों में ही लड़कियों का अनुपात लड़कों से कम है। tu&/ku&;k tuk] e:d bu bfM;k और L0kPN Hkkjr vfHk;ku के सफल क्रियान्वयन के बाद इसी अभियान को हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा के पानीपत में देश व्यापी स्तर पर शुरू किया है और इस योजना का नाम ^^cVh cpkvk] cVh i<kvk^^ रखा गया है। बेटी को केवल जन्म देना ही पर्याप्त नहीं है उसे दुनिया में जीने के लिए काबिल बनाना भी माता–पिता का कर्तव्य है। इस योजना का लक्ष्य लड़कियों को पढ़ाई के जरिए सामाजिक और आर्थिक तौर पर आत्मनिर्भर बनाना है। सरकार के इस नजरिए से महिलाओं की कल्याण सेवाओं के प्रति जागरूकता पैदा करने और निष्पादन क्षमता में सुधार को बढ़ावा मिलेगा। हमारे समाज में आज भी यह बात गहरे तक बैठी है कि लड़कियों के साथ बड़ी जिम्मेदारी आती है। इन्हीं कारणों से लिंगानुपात को नुकसान पहुंचा है। हम 21 वीं सदी में जी रहे हैं लेकिन आज भी बेटी के जन्म होने पर लोग दबी आवाज़ में बधाई देते हैं और बेटे के जन्म पर परिवार की छाती गर्व से फूल जाती है। जन्म के बाद भी लड़कियों के साथ भेदभाव नहीं थमता। बड़े शर्म की बात है कि उसके जन्मदाता ही उसके स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा की जरूरतों को लेकर उसके साथ पक्षपात करते हैं। हर अच्छी चीज़ या सुविधा पहले बेटे को दी जाती है फिर बेटी को।

ठीक ही कहा जाता है कि उसके जन्म से ही उसके अधिकारों का हनन शुरू हो जाता है। हमारे संविधान ने हमें कई मौलिक अधिकार दिए हैं काश ! देश की बेटियों को जन्म लेने का अधिकार भी हम दे पाते। कैसी विडंबना है कि जिंदगी के बाद के अधिकार स्पष्ट हैं लेकिन जब जन्म का अधिकार ही उसे नहीं दिया जा रहा तो बेटी और अधिकारों से तो हमेशा के लिए वंचित ही रहेगी। ^^cVh cpkvk] cVh i<kvk^^ अभियान इसी लक्ष्य को हासिल करने, इसके बारे में जागरूकता फैलाने और बदलाव के लिए शुरू किया गया है। मुझे खुशी है कि प्रधानमंत्री जी ने बेटियों के लिए इतनी गहराई से सोचा जबकि उसके जन्मदाता कई बार अपनी आंखों पर पट्टी बांध लेते हैं। अगर बेटी पढ़ी–लिखी होगी तो दो परिवारों को संस्कारित करेगी। बेटी कुल का दीपक न हो लेकिन वो दीपक है जो एक छोटे से घर को ऐसी रोशनी देती है जो सुकून और शांति के साथ घर में खुशबू लाती है और वो दो परिवारों का नाम रोशन करती है। जो बेटी को कम आंकते हैं वो सबसे पहले अपनी मां का ही सम्मान नहीं करते। मां भी किसी की बेटी ही थी और अगर वही दुनिया में आई न होती तो क्या होता.....उन जैसों को जन्म न दिया होता तो आज उसका अस्तित्व खतरे में न होता।

कन्या भ्रूण हत्या खत्म करने के लिए यह बेहद जरूरी है कि हमारी डॉक्टर बिरादरी को भी यह याद दिलाया जाए कि उनकी शिक्षा जान बचाने की है जान लेने के लिए नहीं। भगवान के बाद एक वे ही हैं जिनसे

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

जीवन देने की उम्मीद की जाती है। कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए आज पूरे समाज को लड़कियों के प्रति अपना नजरिया बदलने की जरूरत है। समाज के हर तबके में यह समस्या व्याप्त है। भले ही पूर्वोत्तर क्षेत्र और आदिवासी इलाकों में लिंगानुपात बेहतर है, लेकिन देश के कई हिस्सों में बालिका भ्रूण हत्या के मामले बहत ज्यादा उभर कर सामने आ रहे हैं। यह अभिनव योजना लड़कियों को बचाने के लिए ही शुरू की है तो हमारा भी दायित्व बनता है कि हम सरकार के प्रयास में अपना भी सहयोग दें। इस योजना में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय और स्वास्थ्य मंत्रालय अन्य मंत्रालयों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। यह योजना न केवल लड़कियों के लिए बल्कि पूरे समाज के लिए वरदान साबित हो सकती है। इससे न केवल बेटा–बेटी के बीच का भेद मिटेगा बल्कि मनुष्य जाति को आभास होगा कि एक बेटी में भी वही गुण हैं जो बेटे में है फर्क परवरिश एवं दृष्टिकोण का है। पैसा आबंटित करना या योजना शुरू करना ही काफी नहीं है। कानून में बदलाव करना पड़ेगा और लड़कियों को नुकसान पहुंचाने वालों के लिए भी सज़ा का प्रावधान बनाना होगा। जमीनी स्तर पर लड़कियों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक किए जाने की भी आवश्यकता है।

हम सभी जानते हैं कि हमारे आस–पास हर कोई बेटा ही चाहता है। अगर बेटा इतना महान होता तो देश में इतनी बड़ी संख्या में वृद्धाश्रम न होते। 21वीं सदी में बेटी ने समाज के हर क्षेत्र में कामयाबी हासिल की है। हमारा इतिहास इस बात का गवाह है कि श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्रीमती प्रतिभा पाटिल जैसी इस देश की कई महान बेटियों ने भारत के तिरंगे को विश्व में सम्मान दिलाया है तो फिर हम आज उसे जन्म के अधिकार से क्यों वंचित रखें। हर भारतीय इस बात की शपथ ले कि ^^cVh cpkvk] cVh i<kvk^^ अभियान में सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर साथ देगा।

D;k g ;s vyx crko] cVk&cVh d chp HknHkko
Tkc ikyu&ik"k.k l gh vkr g lLdkj]
rk cVh D; ugh cu ldrh] c<ki dk vk/kkjA

एकलव्य

* रजनी सूद

एकलव्य तू कितना भोला था
इस समाज की चालाकियों को न तोला था
गर तू अपना अंगूठा न देता
तो हर दिल में भडकता शोला था
एकलव्य तू कितना भोला था ....

गर तुम निर्भिकता दिखाते, उस नादान गुरू को समझाते
और तुम्हारी नादानी का वो फायदा न उठाते
तो तुम इतिहास में अपना नाम लिखवाते
एकलव्य तू कितना भोला था ....

एकलव्य तू उनकी मीठी बातों में फंस गया
प्यार से चलाया तीर उन्होंने तू उसमें धंस गया
भले ही जीत गए वो, जमाना तो उन्हीं पे हंस गया

जिन्होंने डसना चाहा तेरा भोलापन,
जमाना उन्हीं को डस गया
एकलव्य तू कितना भोला था ....

एकलव्य अभी हमने गुरू पूर्णिमा थी मनाई
गुरू की अपार महिमा थी गाई
गुरू तो गुरू होता है, उसका रुतबा महान होता है

गुरू होकर उसने गुरू की महिमा न जानी
महानता उसने गुरू की न मानी
सारा संसार जिसको कहता था ध्यानी
पर मेरी नजर में था वो अज्ञानी
सचमुच, एकलव्य तू कितना भोला था ....

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

विदाई समारोह गीत

* देवराज सिंह देव

निगम को जिस करवट भी
देखता हूं मैं
वो खुशहाल नज़र आता हैं।
निगम से जाने वालों का
हर काम याद आता हैं।।

वो आए थे जब
तो निगम एक सपना था।
वो कर चले साकार
तो आधार नज़र आता है।।

अब से पूर्व जो चले गए
वो पत्थर थे नींव के।
आज चहुंमुखी विकास का
भव्य चेहरा नज़र आता है।।

उन्हीं के पद–चिन्हों पर
निगम आगे बढ़ता रहेगा।
सीढ़ियां विकास की
दिन प्रति–दिन चढ़ता रहेगा।।
छा जाएगा एक दिन
वो काम नज़र आता है।।
..... निगम से जाने वालों का
हर मुकाम नज़र आता हैं।

निगम मिशन के सहयोगी
आज विदा हो रहे हैं।
न जाने क्यों हम
फिदा उन पर हो रहे हैं।।
देखना है तो देख लो
ऐ मेरे निगम वालों।
आज उनके सम्मान में
विदाई समारोह हो रहे हैं।।

कैसे ना कहूँ मैं
इन्हें नींव के पत्थर।
इसी उलझन में मेरे विचार
भाव–विभोर हो रहे हैं।।
निगम की सेवा करना
हम सबका फर्ज़ हैं
ये उसी को निभा कर
आज विदा हो रहे है
..... तभी तो हम इन पर फिदा हो रहे हैं
क्योंकि ये आज निगम से विदा हो रहे हैं

निगम इमारत पर इबादत
जो लोग लिखते आ रहे हैं।
अपने अमूल्य जीवन की
वो आहुति दिये जा रहे हैं।।
..... उन्ही को आज हम विदाई दे रहे हैं
तभी तो हम उन पर फिदा हो रहे हैं

निगम को वृक्ष बना कर
वो सेवानिवृत हो रहे हैं।
उनका हम पर भार रहेगा
ये हम सब कह रहे हैं।।
इसलिए, विदाई पीड़ा को
हम चुपके–चुपके सह रहे हैं।।

खट्टे, मीठे कड़वे अनुभव से
ये सदा भरपूर रहे।
कैसे निकलोगे बचकर इनसे
ये छोड़ आज आधार चले।।

जीवन तो अनमोल रत्न है
ये बिकता नहीं बाजारों में।
जीवन का उद्देश्य रहा क्या
अब सोचो स्वयं विचारों में।।

मैं पक्ष–विपक्ष लिखता नहीं
बस, लिखता स्वतंत्र विचारों को।
मेरी तो है यही कामना
सब दूर करो विकारों को।।

निगम छोड़कर जाने वालों
कुछ तो ''कर'' दे जाओ तुम
निगम के हित में अपने अनुभव की
सलाह अमूल्य दे जाओ तुम।।

''देव'' तो गाता गीत निगम के
और करता है पग–पग पर गुणगान।
सेवानिवृति के अवसर पर
करता रहेगा सबका सम्मान।।

<u>वैसे साथियों</u>
सम्मान से बढ़ कर कोई धन नहीं होता।
झूठ से बढ़कर कोई छल नहीं होता।।
जुदाई से बढ़कर कोई गम नहीं होता।
अज्ञानता से बढ़कर कोई तम नहीं होता।।
ज्ञान से बढ़कर कोई हमदम नहीं होता।
ये ज्ञानी होकर आज विदा हो रहे हैं।।

इसलिए हम इन पर फिदा हो रहे हैं।
क्योंकि ये जिम्मेदारियों से रिहा हो रहे हैं।।
खुशहाल रहे बाकी जीवन इनका
ये दुआ हम सब कर रहे हैं।।

कहने को तो साथियों
आज बहुत कुछ बाकी है।
मगर, ये विदाई समारोह है
अभी औरों की बात बाकी है।।

और भी कहेगें कुछ हमसे अच्छा
बयान करेंगे कम और सच्चा
ताकि मिलेगा सभी को मौका
आज हैं भाईयों विदाई का झौका
..... क्योंकि, हम सब मिलकर विदा कर रहे हैं
भूली–बिसरी यादों को तर–ओ–ताजा
कर रहे हैं

* वेअरहाउस प्रबंधक, सैन्ट्रल वेअरहाउस, गाजियाबाद–प्रथम

लघु कहानियाँ

* नम्रता बजाज

thou esa lLdkjksa dk fo'ks"k egRo gksrk gS] ftlds vPNs lLdkj gksa] mldk thou fuf'pr :Ik ls lQy jgrk gSA ^^lLdkj** dgkuh esa bldk lekos'k gSA blh izdkj] vk/kfudrk dh vkM+ esa xjhc vkSj Hkw[k ls ihfM+r lekt ds fy, f'k{kk nsrh gS, dgkuh ^^VsekVj dh lCth** ;gka izLrqr gS%

संस्कार

"बाबूजी! टॉफी ले लो, पाँच रुपए की दस दे रहा हूँ", 'अंकल जी आप ले लो, आँटी जी आप ले लो।' इन शब्दों के साथ एक नन्हा–सा बालक ट्रेन में अपनी टॉफियाँ बेचने की कोशिश कर रहा था। कान्हा की नज़र जब बच्चे पर पड़ी तो उनके सामने अपने बचपन की यादें तरोताज़ा हो गईं और उनका मन इस बच्चे के लिए द्रवित हो उठा। उन्होंने बच्चे को अपने पास इशारे से बुलाया। बच्चा दौड़कर कान्हा के पास आ गया। उसकी आँखों में चमक आ गई थी कि शायद कान्हा उससे बहुत–सी टॉफियाँ खरीद लेंगे। कान्हा ने उससे पूछा 'बेटा तुम्हारा नाम क्या है ?' बच्चे ने भोलेपन से जवाब दिया, 'अंकल जी मेरा नाम मकरन्द है पर सब मुझे मुक्कु कहकर बुलाते हैं।' 'तुम कितने साल के हो मकरन्द ?' कान्हा ने पूछा। 'पाँच साल का हो गया हूँ। माँ कहती है, अब मैं बड़ा हो गया हूँ, अब मुझे घर की ज़िम्मेदारियाँ समझनी चाहिए।' कान्हा के होंठों पर उस छोटे से बालक के मुख से इतनी बड़ी–बड़ी बातें सुनकर हल्की–सी मुस्कुराहट तैर गई। उसने कहा,''बेटा आप इतने बड़े तो हो गए हो पर क्या आप पढ़ने के लिए स्कूल जाते हो?'' मुक्कु का चेहरा बुझ–सा गया। वह बोला,''अंकल जी पढ़ना तो बहुत चाहता हूँ लेकिन मेरी माँ के पास इतने पैसे ही नहीं हैं इसीलिए तो मैं टॉफियाँ बेच रहा हूँ।'' कान्हा का अंतर्मन हिल–सा गया। इतने में बच्चा बोला, ''अच्छा अंकल जी मुझे देर हो रही है और ट्रेन भी छूटने वाली है। मेरी माँ मेरा इंतज़ार कर रही होगी।'' ''अच्छा सुन! सुन तो, दस रुपए की टॉफियाँ दे जा और यह कुछ रुपए मैं अपनी खुशी से तेरे खर्चे के लिए दे रहा हूँ।'' ''नहीं–नहीं अंकल जी, माँ मारेगी मुझे, केवल दस रुपए ही दे दो और यह लो इसमें से बीस टॉफियाँ निकाल लो।'' कान्हा टॉफियाँ निकालते हुए सोचने लगे कि ऐसे तो इस नन्हे से बच्चे को कितने लोग ठग लेते होंगे। कान्हा ने पूछा, ''बेटा तुम क्या यहीं रहते हो'' ? ''जी हाँ, अंकल जी मैं, मेरी माँ और मेरे छोटे भाई–बहन वो सामने वाली झुग्गियों में रहते हैं। मेरे पिताजी पता नहीं हमें छोड़कर कहाँ चले गए।'' यह कहकर मुक्कु रुआंसा हो गया और तुरंत ट्रेन से नीचे उतर कर भाग गया। ट्रेन धीमी गति से आगे बढ़ने लगी। कान्हा मकरन्द को दूर जाते हुए देखते रहे। उन्होंने सोचा, 'कितना स्वाभिमानी है यह लड़का और इसकी माँ ने इसे कितने अच्छे संस्कार दिए हैं।' यह सब सोचते–सोचते ही कान्हा का अतीत उनकी आँखों के समक्ष चलचित्र बनकर घूमने लगा। पाँच वर्ष के ही तो थे वह भी, जब भारत और पाकिस्तान का विभाजन हुआ था। उनके पिताजी ने उन्हें और उनके बड़े भाइयों को भारत भेज दिया था और स्वयं वहाँ का अपना समूचा घर–बार बेचकर भारत आने की तैयारी में थे। उसी दौरान घर का खर्चा–पानी चलाने के लिए उनके बड़े भाइयों ने कान्हा को भी अपने साथ टॉफियाँ तथा गुड़ बेचने के धंधे में लगा लिया था। वह भी इसी तरह टॉफियाँ बेचा करते थे और कई बार लोगों ने उन्हें बच्चा जान कर ठग लिया था व उनके पैसे भी छीन लिए थे जिसके लिए उन्हें कई बार डाँट भी खानी पड़ी थी, परन्तु वह अपने–आप को बहुत भाग्यवान समझते थे क्योंकि उनके पिताजी बहुत दूरदर्शी और स्वाभिमानी व्यक्ति थे जिन्होंने भारत आते ही अपने सभी बच्चों को काम–धंधा बंद करवाकर स्कूल में पढ़ने के लिए डाल दिया था। वह चाहते थे कि उनके सभी बच्चे खूब पढ़ें और उनका नाम रोशन करें। इसके लिए उन्होंने घर की सारी ज़िम्मेदारियों का स्वयं ही निर्वाह किया। कान्हा से उनका विशेष लगाव था क्योंकि कान्हा ने उच्च पद पर पहुँचकर उनके सपने को साकार किया था। आज कान्हा जिस उच्च पद पर हैं और जो सम्मान उन्हें प्राप्त है, उसके लिए वह अपने माता–पिता को शत्–शत् नमन करते हैं।

*प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

परन्तु आज भी छोटे–छोटे बच्चों को पढ़ने–लिखने की उम्र में यह काम करते देख उनका दिल भर आता है। उन्हें अपना बचपन याद आ जाता है, किन्तु सभी बच्चे कान्हा की तरह खुशनसीब नहीं होते। उनकी ज़िन्दगी का सफ़र शुरू होने से पहले ही ख़त्म हो जाता है। मकरन्द भी उन्हीं बच्चों में से एक है। क्या हम या हमारा समाज इन बच्चों के लिए कुछ नहीं कर सकता ?

उसी क्षण कान्हा के मन में विचार कौंधा, ''नहीं, नही हम इन बच्चों के लिए कुछ क्यों नहीं कर सकते। मैं तो अब रिटायर होने ही वाला हूँ। मैं इन बच्चों के लिए एक 'नया घर' बनाऊँगा, जहाँ मुक्कु जैसे अनेक बच्चों के रहने, पढ़ने और खाने का सारा प्रबंध होगा।'' इस विचार के आते ही कान्हा के अशांत मन में शांति का भाव आ गया और वह इस कार्य को शुरू करने का मन में एक दृढ़ संकल्प लेकर चैन से नींद के आगोश में चले गए। उधर ट्रेन अपनी रफ़्तार से अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ती जा रही थी।

टमाटर की सब्जी

सत्तू आज बहुत खुश था। उसकी माँ ने आज उसकी पसंद की टमाटर वाली सब्जी बनाई थी। जब भी उसके यहाँ टमाटर वाली सब्जी बनती थी उसका मतलब होता था कि आज उसकी माँ को ज़्यादा पैसे मिले हैं और आज वह बहुत खुश है। साल–छह महीने में एक बार उसके यहाँ यह सब्जी बनती थी। सत्तू यानि सतीश का पिता बरसों पहले उसकी माँ और उसे छोड़कर चला गया था। माँ ने जैसे–तैसे कमाकर उसे पाला–पोसा था। आठ वर्षीय सत्तू भली–भाँति जानता था कि उसकी माँ उसे पालने और बड़ा आदमी बनाने के लिए बहुत मेहनत करती है इसलिए वह माँ से किसी तरह की कोई ज़िद नहीं करता था। परन्तु टमाटर से बनी कोई भी सब्जी उसे बहुत अच्छी लगती थी। उसने माँ से कितनी बार कहा भी कि ''माँ तुम सभी सब्जियाँ टमाटर डाल कर बनाया करो।'' तब माँ कहती, ''मेरा अच्छा बेटा, मैं जानती हूँ तुझे टमाटर बहुत पसंद हैं पर बेटा टमाटर बहुत महंगे हैं। रोज़–रोज़ टमाटर खरीदने की मेरी हैसियत नहीं है। बेटा, तू इतने बड़े स्कूल में जाता है तो उसकी फीस भी तो ज़्यादा लगती है। उसके बाद तो हमारे लिए दो वक्त की रोटी का जुगाड़ हो जाता है, यही भगवान की बहुत बड़ी दया है हम पर। एक बार तू बड़ा आदमी बन जा फिर तो तेरी और मेरी दोनों की सभी इच्छाएं पूरी हो जाएंगी।'' ''और हाँ! मुझे एक जगह और काम मिल रहा है। अगर यह काम मिल गया तो फिर देख अगले महीने ही मैं तेरे लिए टमाटर वाली सब्जी बनाउंगी।'' माँ की बात सुनकर सत्तू बहुत खुश हुआ और माँ के गले से लिपट गया। माँ की आँखें भर आईं कि उसके बेटे ने उससे कोई बहुत बड़ी चीज़ नहीं मांगी फिर भी वह उसकी इच्छा पूरी नहीं कर पाई, पर वह भी क्या करे, अपनी अधिकांश पूंजी तो वह अपने बेटे का सुंदर भविष्य बनाने पर लगा रही है। माँ को इस बात की खुशी भी हुई कि इतनी–सी उम्र में उसका बेटा इतना समझदार हो गया है और वह अपनी माँ की मजबूरी समझता है।

dN o"kk ckn ----

एकदम से सतीश ने अपने नेत्र खोले, पिछली बातें याद करके उनकी आँखें नम थीं। सतीश ने अपनी बूढ़ी माँ की ओर देखा और बच्चों की भांति माँ से लिपट कर रोने लगे। 'अरे–अरे! इतना बड़ा हो गया है और अभी भी रोता है।'', माँ ने कहा। ''इतना बड़ा अफ़सर है और अभी तक बच्चा बना हुआ है।'' सतीश ने अपने आपको संभाला और बोले, ''माँ, यह अखबार पढ़कर आँख में आँसू आ गए।'' माँ बोली, ''ऐसा क्या लिखा है इसमें''। सतीश बोले, ''माँ, तुझे तो पता ही है कि मुझे टमाटर वाली सब्जी कितनी पसंद है और ईश्वर की दया अब से हमें टमाटर क्या किसी भी चीज़ की कोई कमी नहीं है।'' ''हाँ! पर इसमें रोने वाली क्या बात है।'' माँ बोली। '' सतीश माँ को बताने लगे, ''माँ, स्पेन नाम का एक देश है जो भारत से बहुत दूर है, वहाँ पर टोमेटिनो नामक एक त्योहार मनाया जाता है, जैसे हमारे देश में रंगों का त्योहार होली मनाई जाती है। टोमेटिनो में सभी लोग एक–दूसरे को टमाटर मारते हैं और खुश होते हैं। इसमें कई लाख टन टमाटर खराब होता है। पर वह एक संपन्न देश है और उनके अलग रीति–रिवाज हैं। माना कि हमारा भारत देश संपन्न हो रहा है परन्तु अभी भी यहाँ इतनी गरीबी है कि लोगों को भरपेट भोजन नहीं मिलता। मेरे जैसे अनेक बच्चे होंगे जो एक टमाटर तो दूर एक रोटी के लिए भी तरसते हैं। मेरी किस्मत अच्छी है कि तुझ जैसे देवी मेरे साथ थी

कि आज मैं इस पद पर बैठा हूँ और अब खाने–पीने की हमारे यहाँ कोई कमी नहीं है।'' सतीश ने एक लंबी सांस ली। माँ बोली, ''बेटा, तू कहना क्या चाहता है!'' सतीश ने आह भरते हुए कहा, ''माँ, इस अखबार में लिखा है कि अब भारत में भी यह टोमेटिनो मनाया जाने लगा है जिसमें कई टन टमाटर खराब होंगे। माँ, तूने ही बताया था न कि इस भारत देश में पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों को इसलिए पूजा जाता है क्योंकि वह हमें किसी न किसी तरह से पोषित करते हैं। तू ही सोच, क्या भारत देश में इस त्योहार को मनाना उचित है? हमारे देश में तो होली पर रंगों का त्योहार मनाया ही जाता है जिसमें किसी गरीब का भोजन यूं पैरों तले नहीं कुचला जाता। इस देश में अभी भी कितने ऐसे लोग हैं जिन्हें दो जून की रोटी भी नसीब नहीं होती। अभी दो साल पहले ही एक परिवार के दो बच्चे भूख से तड़प–तड़प कर मर गए थे। ऐसे देश की युवा पीढ़ी भूखे लोगों की भूख मिटाने का सोचने के बजाए आधुनिकता के नाम पर खाने की चीज़ों को पैरों तले कुचल रही है। क्यों हम दूसरों की नकल करके अपनी पहचान खोने में लगे हैं।'' माँ ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, ''बेटा, मैं जानती हूँ तुझे ऐसी बातों से बहुत दुख पहुँचता है, पर देख तेरे जैसे और भी सतीश होंगे जिनकी सोच तेरी सोच से मिलती होगी। तुम जैसे लोगों को ही यह ज़िम्मेदारी लेनी होगी। इन बातों पर अफ़सोस करने के बजाए सभी लोगों को उनकी ज़िम्मेदारी का एहसास कराओ और अपनी युवा पीढ़ी को भारत देश की संस्कृति और संस्कारों की ओर वापस लौटने का मार्ग दिखाओ और उनका मार्गदर्शन करो।'' माँ के मार्गदर्शन से एक बार फिर सतीश के चेहरे पर नया तेज़ दिखाई देने लगता है।

परिपक्वता

*** सतविंदर सचदेवा**

- जब आप अन्य सभी में बदलाव लाने के स्थान पर स्वयं अपने आप में बदलाव लाने के लिए प्रतिबद्ध हो जाएँ तो इसका अर्थ है कि आपमें परिपक्वता आ गई है।
- जब आप जो व्यक्ति जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करने लगें तो यह आपकी परिपक्वता का परिचायक है।
- जब आप यह समझने लगें कि प्रत्येक व्यक्ति अपने–अपने दृष्टिकोण के अनुसार सही है तो इसका तात्पर्य यही है कि आपकी सोच परिपक्व हो गई है।
- जब आप यह सोचना सीख जाएँ कि छोड़ो, जाने दो तो समझिये कि आपमें परिपक्वता आ गई है।
- जब आप को किसी रिश्ते में कुछ देना है और उसके बदले में किसी भी प्रकार की कोई आशा ना रखें तो इसका अर्थ यही है कि आपमें परिपक्वता प्रवेश कर गई है।
- जब आपको यह समझ आ जाए कि जो कुछ भी आप कर रहे हैं वह अपने स्वयं की मन की शांति के लिये कर रहे हैं तो इसका अर्थ यही है कि अब आप परिपक्व हो गये हैं।
- जब आप संसार में सबके समक्ष अपनी बुद्धिमत्ता को प्रमाणित करना बंद कर दें तो इसका तात्पर्य यह है कि आप परिपक्व हो गये हैं।
- जब आप लोगों में उनकी सकारात्मकता पर ही केंद्रित होने लगें तो इसका अर्थ यही है कि आप परिपक्व हो गये हैं।
- जब दूसरों से स्वीकृति प्राप्त करना बन्द कर दें तो इसका तात्पर्य यह है कि आप परिपक्व हो गये हैं।
- जब आप अन्य व्यक्तियों से अपना मुकाबला करना बन्द कर दें तो इसका अर्थ है कि आप परिपक्व हो गये हैं।
- जब आप स्वयं अपने आप तक सीमित रह कर शान्ति अनुभव करने लगें तो इसका तात्पर्य यही है कि अब आप परिपक्व हो गये हैं।
- जब आपको यह समझ आ जाये कि इच्छाओं और आवश्यकताओं के मध्य क्या अन्तर होता है और इच्छाओं का दमन करना सीख लें तो इसका मतलब यह है कि आप परिपक्व और समझदार हो गये हैं।
- जब आपको लगने लगे कि भौतिक वस्तुओं का और धन–संपत्ति का मनुष्य की सुख–शान्ति और खुशियों से कोई सम्बन्ध नहीं है तो इसका अभिप्राय है कि आप परिपक्व हो गये हैं।
- सरल और सकारात्मक रह कर स्वच्छन्दता का अनुभव करो और अन्य व्यक्तियों को यही अनुभव करने दो कि आप परिपक्व हो गये हैं।

* निजी सहायक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

नई संस्कृति

lkfgR;dkj fo".kq iHkkdj dk tUe 21 twu 1912 dks eqt¶Qjuxj] mÙkj izns'k esa gqvk FkkA vkius dgkuh] miU;kl] ukVd o fuca/k fo/kkvksa esa ltu fd;k rFkk <yrh jkr] Lolue;h] v/kukjh'oj] {kekiku] nks fe=] iki dk ?kMk] gkjh bR;kfn miU;kl fy[kA blds vfrfjDr vkius gR;k ds ckn] uo iHkkr] MkDVj] izdk'k vkj ijNkb;ka] ckjg ,dkadh] v'kksd] vc vkj ugha] VwVrs ifjos'k bR;kfn ukVdksa dk ltu fd;k o l?k"kZ ds ckn] /kjrh vc Hkh /kwe jgh gS] esjk oru] f[kykSus] vkfn vkj vUr vkids lqifl) dgkuh&lxzg gSA vkius ;k=k o`Rkkar Hkh fy[ks ftuesa T;ksfriqUt fgeky;] tequk xaxk ds uSgj esa lfEefyr gSA

मैं आज आपको लंबी यात्रा की एक घटना सुना रहा हूं।

आप जानते हैं कि जब भी कोई नए प्रदेश में जाता है तो उसे सब कुछ नया—नया जान पड़ता है और वह नयापन प्रायः अच्छा लगता है, आँखो को भी और मन को भी, लेकिन मैं मान लूं कि पहले—पहल मुझे यह नयापन अच्छा नहीं लगा। मेरा कुछ ऐसा विचार हुआ कि यहां का मनुष्य मशीन बन गया है। वह चलता है तो मशीन की तरह केवल चलता ही रहता है। ठहरकर विचार करना वह भूल गया है। कुछ समझ में नहीं आया। लगा, जैसे यहां तो शब्दों के अर्थ ही बदल गए हैं। जैसे मैं किसी नई दुनिया में भटक गया हूं। अब मुझे अपनी दशा उस मुसाफिर जैसी जान पड़ी, जो सुरम्य प्रदेशों की खोज करते—करते मरुस्थल में जा पहुंचता है।

लेकिन हर अंधकार के बाद प्रकाश और हर मरुस्थल के बाद हरियाली भूमि होती है और बाद में ही क्यों, हर अंधकार के भीतर भी प्रकाश चमकता है, हर मरुस्थल के बीच में भी उर्वर भूमि होती है। कल जब मैं खिन्न मन हो एकाकी भटक रहा था तो घूमते—घूमते एक ऐसे स्थान पर पहुंच गया जिसे पाप और पुण्य—दोनों का प्रतीक माना जाता है। उसके बाहर एक बड़े बोर्ड पर लिखा हुआ था—ठहरिए, यह वह स्थान है, जहां आपके दुःख—दर्द का इलाज हो सकता है; जहां आप सहायता और सहानुभूति पा सकते हैं।

मैं ठिठक गया। कैसी अद्भुत बात है। क्या इस देश में सहायता और सहानुभूति सरे बाजार बिकने लगी है।

लेकिन मैं कुछ सोचूं, इससे पहले मेरी दृष्टि अहाते पर जा पड़ी। एक छोटी—सी भीड़ वहां इकट्ठी हो गई थी और वहीं क्यों, बाहर जहां मैं खड़ा था, वहां भी उत्सुकता और उत्तेजना का वातावरण बना हुआ था। आने—जाने वाले वहां ठिठक जाते थे और फिर उधर देखते हुए अचरज के स्वर में बातें करने लगते थे। अचानक मैंने सुना—मेरे पीछे वाले दीर्घकाय व्यक्ति ने धीमे स्वर में कहा. ...' जी हाँ, यह हत्यारा है।'

'सच, किसको मार डाला इसने?'

'अपने बच्चों को।'

मैं आगे बढ़ा। मुझे रास्ता बनाने के लिए तनिक भी परिश्रम नहीं करना पड़ा। जैसे कोई फटती है, उसी तरह वह छोटी सी भीड़ मार्ग से हटती चली गई। विदेशी से सभी भय खाते हैं। मैं जब अहाते के परले कोने पर पहुंचा तो सब लोगों की दृष्टि के साथ—साथ मेरी दृष्टि सामने की छड़ों के उस पार जाकर अटक गई। देखा, सामने थाने का वह कमरा है, जिसमें नए अपराधी रखे जाते हैं। इस समय उसमें एक स्टूल पर एक युवक बैठा है। उसकी वेशभूषा बताती है कि वह निचली मध्यम श्रेणी का युवा है—छरहरा बदन, गौर वर्ण, उन्नत ललाट, बड़े—बड़े नेत्र, किंचित् मोटी नाक, दृढ़ ठोड़ी और सूखा मुख। उसके नेत्रों में न भय है, न पश्चात्ताप; न करुणा है, न क्रूरता।

यह सब पलक मारते ही हो गया। दूसरे क्षण मैंने दृष्टि घुमाई तो सुना, कोई कह रहा था... वह जो स्टूल पर बैठा है।'

'वह। हाँ, वह।'

'वही है।'

'वह हत्यारा है।'

'जी हाँ।'

मुझे फिर भी विश्वास नहीं हुआ, लेकिन अविश्वास का कोई कारण भी नहीं था। तो इस सौम्य युवक ने हत्या की है, वह भी अपनी संतान की? क्या यह पागल है? नहीं, यह तो किसी भी समझदार से अधिक समझदार लगता है–लेकिन पागल के सिर पर क्या सींग होते हैं?.... शांत भाव से एक दृष्टि उठाकर उसकी ओर ताकने लगा। सहसा दृष्टि मिली।

लगा, जैसे उसकी आँखों में समुद्र लहरा रहा है। दूसरे ही क्षण चट्टान की सी निश्चलता ने लहरों को छिन्न–भिन्न कर दिया। आँखो के आगे तिरमिरारे से उठे। कुछ समझ में नहीं आया। पास में खड़ा एक सिपाही बंदूक की जांच कर रहा था। उससे पूछा, 'क्या यही है?'

'जी हाँ,' सिपाही ने बंदूक की गोली निकालकर फिर डालते हुए कहा, 'यही है।'

'इसने अपने बेटी–बेटों की हत्या की है?'

'जी हाँ।'

'यह स्वीकार करता है?'

'यह अपने आप थाने में आया था।'

'मस्तिष्क में कुछ विकृति है?'

'मालूम तो नहीं होता। तब तो यह कुछ उत्तेजित भी था, पर अब तो यह बिलकुल शांत है।'

सिपाही कुछ समझदार जान पड़ा। हिम्मत करके मैंने पूछा, 'दो बातें कर सकता हूं?'

'किससे?'

'इसी युवक से।'

सिपाही कुछ जवाब दे, इससे पहले अंदर से एक अफसर तेजी से निकला और बाहर की ओर चला। रास्ता बनाने के लिए उसे भीड़ से धक्कम–धक्का करना पड़ा। वह क्रुद्ध हो उठा और झल्लाता हुआ बोला, 'सबको बाहर निकाल दो।' उसके वाक्य पूरा करने से पहले ही भीड़ छंटने लगी। कुछ लोग तो आप ही एक–दूसरे को कुचलते हुए चले गए। कुछ को सिपाहियों ने निहायत अदब के साथ रास्ता दिखा दिया, लेकिन कुछ फिर से कंधे उचकाकर ताकते–झांकते रहे। इसी बीच सिपाही ने मुझसे कहा, 'इसने अपनी कहानी लिख दी है। आप अंदर जाकर पढ़ सकते हैं।'

बस, मैं वहां से हटकर इंस्पेक्टर के पास पहुंचा। मैंने उन्हें अपना पूरा परिचय दिया और वह कहानी पढ़ने की अनुमति चाही। इंस्पेक्टर ने कागज मुझे देते हुए कहा, 'पढ़िए।'

मैं कहानी पढ़ने लगा। अक्षर बहुत सुंदर नहीं थे, परंतु अद्भुत रूप से स्पष्ट थे। कहानी बहुत लंबी थी, पर मुझे जो याद रह गया है, वही बताने का प्रयत्न करूंगा। उसने ऐसे शुरू किया था–

मैं जो कुछ करने जा रहा हूं, वह क्षणिक आवेश का काम नहीं है। बहुत लंबे अरसे से मैं उस पर सोचता रहा हूं। मैं उसकी पूरी जिम्मेवारी अपने ऊपर लेता हूं। विश्वास मानिए, मैं जानबूझकर अपनी बेटी और दोनों बेटों की हत्या करने जा रहा हूं। प्रश्न उठ सकता है– आखिर मैं ऐसा क्यों कर रहा हूं? क्योंकि मैं नहीं चाहता कि वे जैसे हैं, वैसी अवस्था में जिएं। मैं नहीं चाहता, उनके कारण मेरा राष्ट्र दुर्बल कहलाए। वे जीवन भर दुःखी रहें और मरघिल्ले पिल्लों की तरह मौत के आने तक चीं–चीं करते रहें; मुझे और मेरी पत्नी को जन्म भर गालियां देते रहें, जैसे मैं अपने माँ–बाप को देता रहता हूं। मैं यह कभी बरदाश्त नहीं कर सकता।

आप शायद समझ गए होंगे कि बच्चे कैसे हैं। कभी आपने डॉक्टरों के इश्तिहार देखे हों तो दवा के प्रयोग से पहले उनके बीमारों की जो अवस्था दिखाई जाती है, उससे भी खराब अवस्था मेरे बच्चों की है। उनमें न रक्त है, न मांस। वे मात्र हड्डी और खाल का ढाँचा मात्र हैं। मैं उन्हें देखता हूं और रोता हूं। मैं अपने को कोसता हूं और अपने माँ–बाप को गाली देता हूं। मैं रह–रहकर भगवान् से पूछता हूं–अजी ओ सिरजनहार! यदि तुम कहीं सुन रहे हो तो मुझे इतना बता दो कि आखिर इन बच्चों का क्या अपराध है?

मैं सच कहता हूं, ये विचार मुझे तिलमिला देते हैं। मैं पागल हो उठता हूं। मैंने इन बातों की चर्चा अपनी पत्नी से की है। वह मेरी बातों को समझती है, पर फिर भी माँ है, ममता में जकड़ी हुई माँ। एक दिन बोली, जो कुछ करता है, भगवान् करता है। जो हो रहा है, ठीक हो रहा है। भगवान् अवश्य कुछ अच्छा चाहते हैं।

मैंने जवाब दिया–निस्संदेह अच्छा चाहते हैं और वह अच्छा यह है कि हम उसके संसार को शक्तिशाली बनाने के लिए इन कीड़ो को नष्ट कर दें।

जैसे बिजली गिरी हो। हतभागिनी सी वह, मेरे बच्चों की मां मेरा मुंह देखने लगी। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। कई क्षण बाद बोली–तुमने क्या कहा था?

मैं तब उत्तेजित हो उठा था। मैंने कुछ जवाब नहीं दिया, पर इससे बात का अंत नहीं हुआ। घुटन और भी बढ़ गई। बच्चे इन बातों को नहीं समझते हैं, सो बात नहीं है। मेरा उन्हें अजीब तरह से देखना और बार–बार उनसे कहना कि तुम बीमार क्यों रहते हो? तुम मोटे क्यों नहीं होते? उनकी माँ का क्रोध में भरकर उन्हें पीटना, हर घड़ी उनकी मौत की कामना करना–इन सब बातों का अर्थ वे अच्छी तरह जानते हैं। एक दिन जब मैं चुपचाप बैठकर कुछ सोच रहा था तो मेरा बड़ा लड़का, जो लगभग पांच वर्ष का था, मेरे पास आया और बोला, 'पिताजी...'

मैं चौंक पड़ा। तीखे स्वर में कहा, 'क्या बात है?'

उसने सरल भाव से पूछा, 'पिताजी, मोटे कैसे होते हैं?'

सच कहता हूं, यह सुनते ही मेरा हृदय टुकड़े–टुकड़े हो गया था।

मैं कई क्षण ठगा सा देखता रहा, फिर उसे उठाकर गले लगा लिया। बोला नहीं गया। बहुत देर तक फफक–फफककर रोता रहा। ओ भगवान्, मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकता है। कभी बरदाश्त नहीं कर सकता।

ऐसे अवसर आने पर कई बार मैंने आत्महत्या करने का विचार किया, पर बच्चों की और दुर्गति हो जाएगी तो–क्या करूं? न मैं उनके लिए धन और दूसरी सुविधाओं का प्रबंध कर सकता हूं, जो उन्हें स्वस्थ राष्ट्र का स्वस्थ नागरिक बना सकें, न मैं स्वयं मरकर उनकी रक्षा कर सकता हूं। साथ ही मैं यह भी नहीं चाहता कि मैं किसी भी तरह अपने राष्ट्र, देश और मानवता के पतन का कारण बनूं...

आखिर मैंने यह निश्चय किया कि मुझे, मेरी पत्नी तथा तीनों बच्चों को अपने आप समाप्त हो जाना चाहिए। हमारे रहने से संसार की सरासर हानि है। न रहने से कोई अंतर नहीं पड़ता। यही बातें समझकर मैंने अपनी पत्नी को भी मना लिया। वह आसानी से नहीं मानी। यद्यपि वह बहुत दुःखी है तो भी उसने मुझे बार–बार मना किया, रोई, मगर और कोई उपाय नहीं था। उसे मेरी बात माननी पड़ी। हमने यह तय किया कि पहले तीनों को जहर देंगे। जब वे समाप्त हो जाएंगे तो हम दोनों भी जहर खा लेंगे....

'पुनश्च' करके फिर लिखा था–अंतिम क्षण में मुझे एक बात सूझी कि मैं जिंदा रहूंगा और कानून का खेल खेलकर फाँसी पर चढूंगा, ताकि दुनिया को अपनी दर्द भरी कहानी समझा सकूं।

अंतिम दो लाइनें जो आज ही बड़ी जल्दी में लिखी गई जान पड़ती थीं– मैंने अपने बच्चों को मार डाला, पर मेरी पत्नी कायर निकली। वह ठीक समय पर भाग गई। मैं उसे दोष नहीं देता। वह माँ है।

कहानी यहां आ कर समाप्त हो गई। मुझे उस समय कैसा लग रहा था, यह मैं स्वयं भी नहीं जानता। मुझे उतना ज्ञात है कि मैं तब सीधे उस युवक के पास पहुंचा। वह छड़ों को पकड़े शांत भाव से खड़ा था। मुझे देखकर वह कुछ सावधान सा हुआ। मैंने यंत्रवत् हाथ जोड़कर उससे कहा, 'तुम महान् हो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं–पर यदि तुम अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संसार से संघर्ष करते तो मैं तुम्हें प्यार भी करता। देखो तो, यह कैसे अच्छा लग सकता है कि कोई बाप अपने बच्चों को मार डाले। यह बुरी बात है। तुम....

मैं आगे कुछ कहूं, इससे पहले उसकी आँखे मेरी आँखों से मिलीं। क्या कहूं–उन आँखो में कितनी करूणा थी, कितनी आग थी। मुझे लगा, जैसे मैं आपादमस्तक जल उठा हूं। मेरे प्राण झुलस रहे हैं। बस, मैं वहां एक क्षण भी नहीं रुक सका, एक क्षण भी नहीं। तेजी से भीड़ को धक्के

देता हुआ सड़क पर आ गया। तब मैं बुरी तरह कांप रहा था और पसीना.....

लेकिन यह क्या! यह किसने झंझोड़ा। किसने पुकारा–उठो भी, अंतु का बुखार तेज हो रहा है। किसी भी तरह किसी डॉक्टर को एक बार बुला लाओ न। देखो तो, कैसे मछली की तरह तड़प रहा है.....

ऐं कौन? तुम? मैंने आँखें मलीं तो देखा कि आँखों में आँसू भरे सामने पत्नी खड़ी है और पास में बच्चा तीव्र ज्वर से तड़प रहा है। ओह, तो मैं स्वप्न देख रहा था, स्वप्न...

क्षण भर के लिए उसकी भयंकरता ने मुझे जड़ीभूत सा बना दिया। साथ ही मुझे खुशी हुई कि मैंने अपने बच्चों की हत्या नहीं की। नहीं, नहीं, यह गलत है। बेशक मैंने उन्हें जहर नहीं दिया, पर मैं उनकी हत्या निरंतर कर रहा हूं। ये रोग और दुर्बलता के चक्रव्यूह में फंसकर तिल–तिलकर दम तोड़ रहे हैं और उन्हें बचाने में असमर्थ मैं निरर्थक स्वप्न देख रहा हूं। यह मोह नहीं तो क्या है? कायरता और किसे कहते है? नहीं, नहीं, मैं अब स्वप्न नहीं देखूंगा। मैं संघर्ष करूंगा, मैं संघर्ष करूंगा। मैं जीवन के अंतिम क्षण तक जीता रहूंगा।

भगत सिंह

*** कृष्ण कुमार**

रोगी से मीठा बोलने का
प्यार से पास बैठाने का
देकर सस्ती असली दवा
उसे जल्दी ठीक करने का

रात की ड्यटी पर जागने का
रोगी की प्रतीक्षा करने का
अल्पतम टेस्ट करके
सफल ऑप्रेशन करने का

संकल्प लेते हो तो डॉक्टर
मेरा शहीदी दिवस मनाना।

शुद्ध सीमेंट लोहा लाने का
सकल सामग्री लगाने का
सृदृढ़ निर्माण की इच्छा से
सड़क पुल भवन की संविदा का

रिश्वत कमीशन नहीं करने का
निर्माण में विलम्ब न करने का
प्रसन्न करने हेतु भ्रष्टों को
निष्ठाहीन न होने का

संकल्प लेते हो तो अभियंता
मेरा शहीदी दिवस मनाना।

समय से डाक निपटाने का
स्मरण पत्र न पाने का

झूठे बिलों पर आपत्ति कर
ईमानदारी दर्शाने का

स्टेशनरी अपव्यय न करने का
कार्यालय में ''चैटिंग'' न करने का
कार्य समय में कार्य में रम कर
ऊर्जा की बचत करने का

संकल्प लेते हो तो कर्मी
मेरा शहीदी दिवस मनाना

निर्धन को गोद लेने का
शिकायती को सुनने का
रिश्वतखोरी से मुहं मोड़
सच्ची रपट लिखने का

रेहड़ी वाले को तंग न करने का
ऑटो वाले को अशांत नहीं करने का
सबसे मीठी भाषा बोल
जनता का दिल जीतने का

संकल्प लेते हो तो हवलदार
मेरा शहीदी दिवस मनाना।

महिलाओं का सम्मान करने का
वरिष्ठों का हर काम करने का
मां–बाप को रखकर प्रसन्न सदा
गुरूजनों का मान करने का

सच्चरित्र समाज बनाने का
देश को हर रोग भगाने का
योग का करके प्रचार ज्वार
हर व्यक्ति को बलवान बनाने का

संकल्प लेते हो तो मेरे प्यारे युवा
मेरा शहीदी दिवस मनाना।

* पूर्व प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

प्राकृतिक सौंदर्य का खजाना : पूरब का स्कॉटलैण्ड - शिलांग

* महिमानन्द भट्ट

सच कहते हैं इस धरती पर प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत खजाना है और यह सौंदर्य ऐतिहासिक इमारतों, विरासत स्थलों, रंग–बिरंगी विविधताओं एवं स्वरूप, पौराणिक संस्कृतियों, प्राचीन कलाओं एवं नृत्यों, पारम्परिक मेलों एवं त्यौहारों, संग्रहालयों, विविध पर्वत श्रृंखलाओं, झरनों और नदियों आदि से झलकता है तथा आकर्षण का केन्द्र बनता है। ;g Hkh lp dgk x;k gS fd ;g nqfu;k ,d fdrkc tSlh gSA tks thou esa ç—fr dk lkSan;Z&n'kZu dh ;k=k ugha djrs os blds flQZ ,d iUuk gh i<+ ikrs gSaA इस दुनिया रूपी किताब का एक और पन्ना पढ़ने के लिए जून में मुझे एलटीसी पर अपनी पत्नी के साथ शिलांग जाने का सुअवसर मिला। दिल्ली से गुवाहाटी और गुवाहाटी से सड़क मार्ग से होकर जाते हुए रास्ते में कई रमणीय स्थानों को देखते हुए जब मैं पूरब का स्कॉटलैण्ड कहे जाने वाले खूबसूरत जगह शिलांग पहुँचा तो वहाँ के अनुपम दृश्य को देखते हुए मन गद्‌गद्‌ हो गया।

यह उत्तर–पूर्वी राज्य मेघालय की राजधानी है। भारत के पूर्वोत्तर में बसा शिलांग हमेशा से पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। पहाड़ियों पर बसा छोटा और खूबसूरत शहर पहले असम की राजधानी था। असम के विभाजन के बाद मेघालय बना और शिलांग वहां की राजधानी। ऊंचाई पर बसे इस शहर में मौसम हमेशा सुहावना बना रहता है। मानसून के दौरान जब यहां बारिश होती है, तो पूरे शहर की खूबसूरती और निखर जाती है और शिलांग के चारों तरफ के झरने जीवंत हो उठते है।

शिलांग एक छोटा–सा शहर है जिसे हमने कुछ पैदल घूमकर देखा और लंबी दूरी के लिए टैक्सी किराए पर लेकर सबसे पहले हम शिलांग और उसके आसपास अनेक दर्शनीय देखने गए। जो स्थान मुझे बहुत अच्छे लगे उनका उल्लेख मैं इस लेख के माध्यम से कर रहा हूँ, जिससे किसी का भी मन यहां जाने का हो सकता है।

सबसे पहले हम शिलांग पीक पर गए जो शिलांग का सबसे ऊँचा प्वाइंट है। यहां से हमने पूरे शहर का विहंगम नजारा देखा तथा फोटोग्राफी भी की। रात के समय यहां से पूरे शहर की लाईट असंख्य तारों जैसी चमकती है। शिलांग पीक शिलांग शहर से लगभग 1500 फुट की ऊँचाई पर है इसलिए यहां का तापमान कम होता है। यहां पर भारतीय वायु सेना का पूर्वी कमांड का कार्यालय भी है। बहुत ऊँची चोटियों पर बड़े–बड़े रडार लगाए गये हैं। यह देश की सुरक्षा के लिये अत्यंत संवेदनशील है। शिलांग पीक पर खड़े होकर पूरे शहर को देखा जा सकता है। इसके बाद हम लेडी हैदरी पार्क गए जो हर प्रकार के फूलों से सुसज्जित खूबसूरत पार्क है। इसमें एक छोटा चिड़ियाघर और अनेक प्रजातियों की तितलियों का संग्रहालय है। इसके अलावा यहाँ पर कैलांग रॉक, वार्डस झील, मीठा झरना, हाथी झरना आदि स्थान भी घूमने लायक हैं।

शिलांग के स्थानीय बाजार में खरीददारी करने के लिए हम पुलिस बाजार और बारा बाजार गए। हमें बताया गया कि पूर्वी मेघालय से लोग यहां अपना सामान बेचने आते हैं। पुलिस बाजार के मध्य में कचेरी रोड के किनारे बहुत–सी दुकानें हैं, जहां हाथ की बुनी हुई विभिन्न आकारों की सुन्दर टोकरियां मिलती हैं। हाथ से बुनी हुई शॉल, हस्तशिल्प और केन वर्क की खरीददारी के लिए यहां मेघालय हस्तशिल्प, खादी ग्रामोद्योग और पुरबाश्री है। यहां के लोगों ने हमें बताया कि मार्च से जून तक का मौसम शिलांग में सुहावना रहता है, लेकिन बरसात के दिनों यहां घूमने का अपना ही मजा है। मॉनसून में यहां पर्यटक कम ही आते हैं।

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

शिलांग के बाद एक दिन के लिए हमने चेरापूंजी घूमने का कार्यक्रम बनाया। शिलांग से चेरापूंजी का रास्ता भी प्राकृतिक सौंदर्य का अद्‌भुत दर्शन कराता है क्योंकि बीच–बीच में बहुत ही रमणीय झरने मन को आकर्षित करते हैं। यह स्थान दुनिया भर में मशहूर है। हाल ही में इसका नाम चेरापूंजी से बदलकर सोहरा रख दिया गया है। वास्तव में स्थानीय लोग इसे सोहरा नाम से ही जानते हैं। यह स्थान दुनिया भर में सर्वाधिक बारिश के लिए जाना जाता है, हालांकि अब यह ख्याति इसके समीप स्थित मौसिनराम ने अर्जित कर ली है। यहां कई गुफा भी हैं। चेरापूँजी बांगलादेश सीमा से काफी करीब है, जहां से हमने बांग्लादेश सीमा को भी नजदीकी से देखा। यहाँ पर एलिफण्ट फॉल्स बहुत ही बडा झरना है जिसकी आवाज बहुत दूर से सुनी जा सकती है। चेरापूँजी के समीप नोहकालीकाई झरना भारत का सबसे ऊँचा झरना है। चेरापूंजी प्रतिवर्ष की भारी बारिश के लिये जाना जाता है और इस झरने के जल का स्रोत यही बारिश है। इसलिये बताते हैं कि दिसम्बर से फरवरी के मध्य के सूखे समय में यह झरना काफी हद तक सूख जाता है। झरने के ठीक नीचे नीले–हरे रंग के पानी वाले तैरने के क्षेत्र बन गये हैं। कहते हैं कि इस झरने के पास स्थित खड़ी चट्टान से छलाँग लगाने वाली स्थानीय लड़की का लिकाई के नाम पर इस झरने का नाम नोहकालीकाई पड़ा। पहले नोहकालीकाई झरने के पार स्थित एक दूर के स्थान से देखा जाता था लेकिन हाल ही में ऐसी सीढ़ियाँ बनाई गई है जो आपको झरने के ठीक नीचे तक ले जाती हैं। स्पॉन्डिलाइटिस और अस्थमा जैसी बीमारियों वाले लोगों को नीचे नहीं जाने की सलाह दी जाती है क्योंकि सैकड़ों सीढ़ियाँ वापस चढ़ना काफी कठिन हो जाता है।

चूँकि चेरापूँजी (जिसका शाब्दिक अर्थ है सन्तरों का स्थान) में वर्ष भर भारी बारिश होती है इसलिये यहाँ की मिट्टी हल्की हो गई है जिसके कारण यहाँ खेती करना लगभग असम्भव है। ऐसा इसलिये है क्योंकि लगातार बारिश और वर्षों के वन कटाव के कारण मिट्टी की ऊपरी परत कमजोर हो जाती है और अगली बारिश में वह परत बह जाती है। लगातार बारिश होने के कारण ही इस क्षेत्र में कई मन्त्रमुग्ध कर देने वाले पर्यटक स्थल हैं। मास्मई, नोहकालीकई, डैन थ्लेन जैसे झरने ऊँचे पहाड़ों से सँकरे गड्ढों में गिर कर एक अविस्मरणीय चित्र प्रस्तुत करते हैं। सुन्दर नोहकालीकई झरने के बारे में यह बताना आवश्यक है कि यह देश के सबसे बड़े झरनों में से एक है। चेरापूँजी पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सा–इ–मीका पार्क में भरपूर मनोरंजक गतिविधियाँ उपलब्ध कराई गई हैं।

pjkiwth & eueksgd –';ksa dh chp

हवादार सड़कों पर शिलाँग से सँकरे तथा तंगघाटी वाले रास्तों से गुजरते हुये और कुहरे से निकलते हुए तथा अपने चेहरे पर बादलों वाली बयार को महसूस करते हुए हम एक दिन खूबसूरत चेरापूँजी में ही रुके। वास्तव में प्रकृति ने सोहरा को भरपूर सँवारा है जिसके कारण यह एक पवित्र पर्यटक आकर्षण बन गया है। चेरापूँजी का पर्यटन केवल सामान्य इधर–उधर घूमना नहीं है बल्कि बहुत कुछ साहसिक पर्यटन भी है। सामान्य पर्यटक स्थानों से लेकर लीक से हटकर पर्यटक स्थान चेरापूँजी में पाये जाते हैं। यह मेघालय के पूर्वी खासी पहाड़ी जिले का एक कस्बा है। यह एक पठार पर बसा है जहाँ से बाँग्लादेश का असीमित लगने वाला मैदानी भाग दिखता है।

चेरापूँजी और शिलांग से होकर वापसी पर हम प्राचीन काल का प्राग्ज्योतिषपुर (पूरब की ज्योति) महानगर गुवाहाटी पहुँचे। इसे पूर्वोत्तर भारत का मुख्य द्वार कहा जाता है। ब्रह्मपुत्र के विशाल तट पर फैला यह महानगर चारों ओर से सुन्दर पहाड़ियों से घिरा अत्यंत सुरक्षित किले जैसा प्रतीत होता है। गुवाहाटी का अर्थ है 'ताम्बूल का हाट'। कहा जाता है कि पौराणिक काल में इस नगर का निर्माण असुर राजा नरकासुर ने कराया था। उसी ने कामाख्या मंदिर तक पैदल यात्रियों के

लिए रास्ता भी बनवाया था। बाद में अहोम राजाओं के शासन काल में उनकी राजधानी भले ही शिवसागर नामक स्थान पर रही, लेकिन गुवाहाटी का महत्त्व उनके लिए भी बहुत अधिक था। गुवाहाटी में फैंसी बाजार, पान बाजार और प्रमुख व्यापारिक स्थल हैं और ब्रह्मपुत्र पर चलने वाले जलयान पर्यटन और विपणन के प्रमुख साधन हैं।

ब्रह्मपुत्र पर बना शराईघाट नदी सेतु इस महानगर के साथ देश के अन्य भागों को जोड़ता है। यहाँ के दर्शनीय स्थलों में तारामंडल, पंजाबाड़ी स्थित बिड़ला विज्ञान केंद्र, हाईकोर्ट, दूरदर्शन केंद्र, उमानंद, कामाख्या, दौल गोविन्द, शुकेश्वर, नवग्रह, शरणीया पहाड़ी की चोटी पर बना गाँधी मंदिर, वशिष्ठाश्रम आदि भी हैं। देश के अन्य महानगरों के समान सुन्दर और व्यवस्थित होने तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, कला और संस्कृति आदि सभी दृष्टियों से गुवाहाटी उन्नति की ओर अग्रसर है।

xqokgkVh i;ZVu & lkaL—frd dk lxe dk 'kgj

पूर्वोत्तर भारत का प्रवेश द्वार गुवाहाटी असम का सबसे बड़ा शहर है। ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे पर स्थित यह शहर प्राकृतिक सुंदरता से ओत–प्रोत है। यहां न सिर्फ राज्य बल्कि पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र की विविधता साफ तौर पर देखी जा सकती है। संस्कृति, व्यवसाय और धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र होने के कारण गुवाहाटी बेहद रंगीन हो उठता है। यहां दशकों से विभिन्न नस्ल, धर्म और क्षेत्र के लोग रहते आए हैं, जिससे यह जगह विविधताओं से भरा पड़ा है।

xqokgkVh dk i;ZVu LFky

गुवाहाटी पर्यटन स्थलों से भरा पड़ा है। ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे से आप सरियाघाट पुल का विहंगम नजारा देख सकते हैं। अगर आप भी यहां जा रहे हैं तो असम स्टेट म्यूजियम, गुवाहाटी तारामंडल और शहर के ढेर सारे मंदिरों को देखना न भूलें।

xqokgkVh i;ZVu& çk—frd lkSan;Z dh ,d >yd

पूर्वोत्तर का केन्द्र होने के कारण गुवाहाटी व्यवसायिक रूप से काफी गहमागहमी वाला शहर है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी ये शहर काफी समृद्ध है। यहां श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र है और यहां बीहू व दूसरे उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते हैं। यह ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसा, पूर्वोत्तर भारत का मुख्य शहर है। यह नगर प्राचीन हिंदू मंदिरों के लिए भी जाना जाता है। इस आधुनिक संसार में, जहां सभी कुछ हाइटैक है, प्राचीन काल मे इस महानगर को प्राग्ज्योतिस्पुर के नाम से जाना जाता था, जो की प्राचीन असम (कामरूप) की राजधानी थी। गुवाहाटी असम का महत्त्वपूर्ण व्यापार केंद्र तथा बंदरगाह है। पूर्वोत्तर का प्रवेश द्वार गुवाहाटी आसपास के क्षेत्र की व्यवसायिक गतिविधियों का केन्द्र है। इसे विश्व का सबसे बड़ा चाय का बाजार माना जाता है। गुवाहाटी की आबादी मिलीजुली है, जिसमें असमी, बंगाली, पंजाबी, बिहारी, नेपाली, राजस्थानी तथा बांग्लादेशी शामिल हैं।

गुवाहाटी खेलों की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। गुवाहाटी के पश्चिम में नीलाचल हिल पर स्थित मंदिर असम की वास्तुकला का एक उदाहरण है, जिसका गुम्बद मधुमक्खियों के छत्ते की भांति है। यहां पूरी धार्मिक श्रद्धा और विश्वास से मुख्य रूप से दो त्यौहार मनाए जाते हैं। सितंबर में मनासा पर्व के दौरान श्रद्धालु पारंपरिक वेशभूषा में नृत्य करके देवी से दुआ मांगते हैं। गुवाहाटी शहर की जीवनरेखा– ब्रह्मपुत्र नदी है।

शिलांग, चेरापूँजी एंव गुवाहाटी तथा इसके आसपास देखने लायक अन्य कई छोटी–बड़ी जगह हैं। विभिन्न सुनहरे पलों और यादों को संजोए हुए यह यात्रा न केवल सुखमय बल्कि जीवन की एक यादगार यात्रा के रूप से हमेशा मन को प्रफुल्लित करती रहेगी। यदि कोई अभी तक धरती के इस अद्भुत वरदान शिलांग, चेरापूंजी और गुवाहाटी नहीं गए हों तो उन्हें मेरी यही राय है कि वे एक बार यहाँ जरूर जाएं और प्रकृति के इस अनमोल खजाने का पूरा आनंद लें।

आभासी जिंदगी - पोस्ट, लाइक, कमेंट्स

* **मीनाक्षी गंभीर**

न जाने जिंदगी का ये कैसा दौर है, इंसान
खामोश हैं और ऑनलाइन पर बातों का शोर है..!

"इंटरनेट" बस नाम ही काफी है। आज इंटरनेट के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इंटरनेट ने कुछ ही वर्षों में सब कुछ बदल डाला है और इंटरनेट के इस प्रभाव को शब्दों द्वारा नहीं समझा जा सकता। आज से 30 वर्ष पहले हमारी जिंदगी में इंटरनेट (Internet) नाम का कोई जादुई जिन्न नहीं था और करीब 10–12 वर्ष पहले तक फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर, यू–टयूब, इन्स्टाग्राम और स्काइप जैसी सोशल नेटवर्किंग भी नहीं थी। तब हम ई–मेल की जगह खत भेजा करते थे और हमें गलियों में कम से कम एक बार तो डाकिया नजर आ ही जाता था अब तो डाकिये को डाक लाए हुए कई महीने बीत गए। तब ज्यादातर गलियों में गप्पें मारते हुए लोग नजर आ ही जाते थे। आजकल उन "गप्पों" ने "चैटिंग" का रूप ले लिया है और ज्यादातर गलियां सूनी नजर आती हैं क्योंकि सारे लोग व्हाट्सएप एंव फेसबुक पर व्यस्त है।

यह **तत्काल** (instant) जमाना है। हर चीज इंस्टेंट। सुख, दुःख, प्रेम, विरह, कला, कविता, कहानी, फोटोग्राफी, समीक्षा, आन्दोलन, खबरें, सब कुछ इंस्टेंट। फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप और न जाने क्या–क्या। बात दिमाग में पूरी तरह आ भी नहीं पाती कि फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप की दीवार पर टंग जाती है। बात पूरी समझ भी नहीं पाते हैं कि लाइक्स और कमेंट्स की भीड़ बढ़ने लगती है। अजीब सा नशा है इसमें। है ना। इस कदर नशा कि एक भी पल इसके बिना रहना मुश्किल लगता है। हाथों में मोबाइल है, मोबाइल हमेशा दुनिया से आपको जोड़े रखता है। बाहर की दुनिया से, जाने–अनजाने लोगों से जुड़े रहने का ऐसा नशा कि अपने आसपास की दुनिया, अपने भीतर की दुनिया सबसे दूरी बढ़ती जा रही है।

काश! कोई हमें सुन लेता, वहां से जहां शब्दों का कोई काम ही नहीं रहता। काश! कोई हमें पढ़ लेता ठीक वहां से जहां अक्षरों में दर्ज होने के कोई मायने नहीं रहते। काश! कोई खामोशी की आंच में पकते दुःख में अपने होने के अहसास को मिला देता। काश! कोई घड़ी भर को हमें तन्हा छोड़ देता कि अरसा हुआ खुद से बात ही नहीं हुई परन्तु ये ख्वाहिश तो जिंदगी से कुछ ज्यादा ही डिमांड करने जैसा नहीं लगता क्या? आलम तो यह है कि जो कहा जा रहा है, उसे ही ठीक से समझ पाने में दिक्कत है। जो लिखा जा रहा है उसके अर्थों की अर्थी निकालने वालों की कमी नहीं। खामोशी? किसे वक्त है खामोशी सुनने की, और चुप ही कौन है, यहां हर वक्त आवाज ही आवाज। अपने आप से बात करने पर कितने लाइक्स आयेंगे भला? अपने आपसे हुई बात को भी चलो झट से फेसबुक और व्हाट्सएप पर दर्ज करके देखते हैं। देखते ही देखते लाइक्स की भरमार लग जाएगी।

माँ अस्पताल में है, फेसबुक पर दर्ज है। पिता की मृत्यु हो गयी, फेसबुक पर दर्ज। ब्रेकअप, फेसबुक पर, लिव–इन रिलेशनशिप फेसबुक पर। सुबह का नाश्ता, दोपहर का खाना, सुबह के खाने में पकौड़े खाये या पोहा, फेसबुक पर, शादी की सालगिरह, पत्नी से प्रेम, किसी का कोई शेर, मेट्रो में टकराना किसी पुराने दोस्त से, कोई अच्छी–सी फिल्म देखना, कुछ भी। सब कहने की आजादी है। इधर स्टेटस अपडेट हुआ, उधर लाइक्स गिरने शुरू। कभी–कभी तो हैरत होती है कि जिस स्टेटस पर झट से लाइक मिलने शुरू हो गये हैं, उसे तो पढ़ने में ही कम से कम दो मिनट लगते, फिर सेकेंड्स में कोई लाइक कैसे कर सकता है। लम्हा–लम्हा जिंदगी फेसबुक पर दर्ज हो रही है। कहीं घूमने जाइये तो फेसबुक फोटोग्राफी की ऐसी भीड़ उमड़ी नजर आती है कि क्या कहा जाए। वही पोज, वही मुस्कुराहट, सब कुछ कृत्रिम। जैसे जीवन का उद्देश्य ही फेसबुक भर बनकर रह गया हो। सारे लोग घूमने जाते हैं, हमें भी जाना चाहिए। कितने दिन से अच्छी और नई प्रोफाइल पिक्चर अपलोड नहीं हुई तो निकल पड़े अच्छे दृश्यों और फेसबुक पर अपलोड करने वाली तस्वीरों की तलाश में। दिमाग अक्सर इसी बात में लगा रहता है कि आपकी पोस्ट की गयी चीजों पर क्या कमेंट आया होगा, कितने लोगों ने लाइक किया होगा। कई बार लगता है कि जिंदगी को दर्ज करने की आपाधापी में जिंदगी को जीना

*वरिष्ठ निजी सहायक, निदेशक (कार्मिक) कार्यालय, नई दिल्ली

भूल गये हैं। यह मन के उबाल का ठीहा है। जो मन में आया झट से उड़ेल दिया। अब मन के उबाल का ठीहा है तो जाहिर है मन की तरह चंचल भी होगा। हर तरह के भाव दुनिया के सामने झट से रख दिए जाते हैं। पूरी दुनिया, माने आपके आभासी (virtual) दोस्तों की दुनिया। ये आभासी दोस्त मन के भावों को अलग–अलग तरह से ले रहे होते हैं। किसी को आप दुखी नजर आते हैं अपने स्टेटस में तो सांत्वना के, समझाने के लिए लोग बढ़ते चले आते हैं। कोई मसखरी करता है, टांग खींचता है। मन के नितांत अकेलेपन में यह झूठे–सच्चे लाइक्स, कमेंट्स यूँ तो राहत देते से मालूम होते हैं लेकिन खतरा तब बढ़ता है, जब इनकी आदत होने लगती है।

व्हाट्सएप, फेसबुक – अभिव्यक्ति का नया माध्यम, अभिव्यक्ति का सुंदर संसार है। मुझे याद है कि मुझे यह पसंद भी नहीं था कि खुले तौर पर जाकर अपनी बात को सबके सामने रख देना। यह बात तो कभी समझ ही नहीं आई कि जिस जिंदगी में एक खालिस दोस्त को तरसते हों, उसमें हजारों दोस्त होने के क्या मायने होते हैं। बावजूद इसके व्हाट्सएप, फेसबुक जिंदगी में दाखिल हो ही चुका है। यह भागते–दौड़ते जीवन का एक सिरा है। "इंटरनेट" के इस आभासी संसार ने कई द्वार भी खोले। जो आपसे कभी मिला नहीं, वो हजारों किलोमीटर दूर बैठकर आपके एक–एक शब्द पर आपको शाबासी दे रहा है। पल भर में निराशा दूर कहीं छिटककर चली जाती है। फेसबुक और व्हाट्सएप, मानव सुलभ आकांक्षाओं को पूरा करने की जगह है। पल भर में मूड बदलने की जगह। पल भर में अपना गुस्सा उगलने की जगह। जो फेसबुक जिंदगी में शामिल हुआ था, वो कब जिंदगी बनने लगता है, पता ही नहीं चलता। पुराने समय में कभी होता यूं कि अभी, बस अभी कोई बात कहनी है लेकिन महीने भर बाद कहने का मौका मिला, बात भी गई, उसके कहने का महत्व भी। परन्तु इंटरनेट के माध्यम से आज वो बात तुरंत अपलोड हो जाती है। इन सब फायदों के चलते इंटरनेट के जरूरत से ज्यादा जिंदगी में दाखिल होने के तमाम जोखिम हैं जो अक्सर लोगों को पता भी नहीं चलते– जैसे कि आसपास के लोगों से कम बात होने लगती है। फोन पर बात करना भी कम होता जाता है। सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी कम होने लगती है घूमना, फिरना, आउटडोर गेम्स की जगह जिंदगी में कम होने लगती है। खाने का टाइम गड़बड़ाने लगता है। ज्यादा वक्त इंटरनेट पर बीतने लगता है। घर के लोगों से भी फेसबुक पर बात होने लगती है।अगर किसी वजह से इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध न हो पाये, कनेक्शन न मिल पाये या नेटवर्क की दिक्कत हो तो बहुत बेचैनी होने लगती है। बुरा नहीं है फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर पर दर्ज होना लेकिन किस हद तक? छद्म प्रशंसाओं के फेर में खुद को खुदा समझ बैठना अपना नुकसान करना ही है। ढेर सारा नवेतर साहित्य यहां जन्म ले रहा है। व्हाट्सएप पर ज्ञान बांटने वालो की कमी नहीं, कोई शायर बन गया है तो कोई कवि, कोई धर्म का प्रचार कर रहा है, लोग अपनी संभावनाओं को तलाश रहे हैं। लम्हा–लम्हा जिंदगी दर्ज होने वाली इन फेसबुकिया दीवारों और व्हाट्सएप दीवानों यानी फ्रेंड्स से थोड़ी दूरी भी जरूरी है ताकि जिंदगी के पास आया जा सके।

मेरी एक दीदी जो कॉलेज में प्राध्यापिका हैं, उन्होंने अपने कॉलेज में विद्यार्थियों की अंग्रेजी में लिखी उत्तर पुस्तिका जांचते हुए पाया कि काफी छात्र–छात्राओं ने अंग्रेजी शब्द Between को (BW) लिखा था और (You, We, Are) जैसे अंग्रेजी शब्द को तो हर जगह सभी ने क्रमशः अंग्रेजी अक्षर में (U,V,R) लिख दिया था। कक्षा में विद्यार्थियों से पूछा तो सबने कहा कि मैडम 'फेसबुक और व्हाट्सएप पर इसी तरह लिखते–लिखते हाथों को वैसी ही आदत पड़ गई है और अब कौन इस तरह पूरे शब्द लिखने में समय खराब करे!' विद्यार्थियों की बातों से लगा कि क्या आज के दौर में भाषा और व्याकरण की उपयोगिता समाप्त होती जा रही है! क्या हम एक नई भाषा गढ़ रहे हैं, जिसका कोई व्याकरण नहीं है। आजकल फेसबुक और अन्य सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटों पर जन्मदिन की शुभकामनाएं देने का चलन खूब बढ़ा है। लेकिन अगर हम इस पर गौर करें तो पता चलेगा कि जन्मदिन के मौके पर ज्यादातर शुभकामनाएं अंग्रेजी में 'HBD' ('हैप्पी बर्थ डे' का संक्षेप) लिख कर दे दी जाती हैं। क्या हम जीवन की आपाधापी में इतने ज्यादा व्यस्त हो गए हैं कि जन्मदिन की शुभकामनाएं भी किसी तरह बस निबटा भर रहे हैं? यों इस प्रसंग में

सकारात्मक रूप से देखा जाए तो इन वेबसाइटों की वजह से ही हम एक–दूसरे को जन्मदिन की बधाई दे पाते हैं, क्योंकि ये हमें याद दिलाती हैं कि आज आपकी मित्र सूची में शामिल व्यक्ति का जन्मदिन है। वरना तो अपने संपर्क में जितने लोग होते हैं, उनमें से हर किसी का जन्मदिन याद रखना भी थोड़ा कठिन है। हमारे ठीक तरह से शुभकामनाएं लिखने से हमारे संपर्क के किसी भी व्यक्ति को अच्छा लगेगा। लेकिन अभी वाक्यों को संक्षेप में शब्द भी नहीं, बल्कि अक्षर बना कर भेजने से तो ऐसा लगता है कि जैसे बस यह काम किसी तरह बेमन से हड़बड़ी में निपटाया जा रहा है। ठीक यही बात शोक संदेशों पर भी लागू होती है, जिनमें सिर्फ 'आरआइपी' (रेस्ट इन पीस) लिख कर काम चला लिया जाता है।

मुझे आज व्हाट्सएप द्वारा एक सन्देश प्राप्त हुआ, जिसकी बदौलत मैंने ये लेख लिख दिया उसको आप के साथ साँझा करना चाहूंगी–

"सुरेश के पिताजी बीमार पड़ गये, उन्हें आनन–फानन में नजदीक के अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा। अस्पताल पहुँचते ही सुरेश ने अस्पताल के बेड पर उनकी फोटो खींची और फेसबुक पर 'Father ill Admitted to hospital' स्टेटस के साथ अपलोड कर दी। फेसबुकिया यारों ने भी 'Like' मार–मार कर अपनी 'ड्यूटी' पूरी कर दी। सुरेश भी अपने मोबाइल पर पिताजी की हालत 'Update' करता रहा। पिताजी व्याकुल आँखों से अपने 'व्यस्त' बेटे से बात करने को तरसते रहे। आज सुरेश ने देखा कि पिताजी की हालत कुछ ज्यादा खराब है।

पुराना वक्त होता तो बेटा भागता हुआ डाक्टर को गुहार लगाता पर उसने झट से 'बदहवास' पिता की एक–दो फोटो और खींच कर 'Condition critical' के स्टेटस के साथ अपलोड कर दी। फेसबुकिया यारों ने हर बार की तरह इस बार भी अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभा दी। दो–चार घनिष्ठ मित्रों ने बेहद मार्मिक कमेंट कर अपने संवेदनशील होने का प्रमाण दिया। "वाह! इनकी आँख का आँसू भी साफ दिख रहा है।" फोटो मोबाइल या कैमरे से लिया है? तभी नर्स आई – 'आपने पेशेंट को दवाई दी?' 'दवाई?' बिगड़ी हालत देख, नर्स ने घंटी बजाई 'इन्हें एमरजेंसी में ले जा रहे हैं!' थोड़ी देर में 'बेटा' लिखता है –'पिताजी चल बसे!सॉरी...नो फोटो...'

मेरे पिताजी का अभी–अभी देहांत हो गया! ICU में फोटो खींचनी अलाउड नहीं थी 'कुछ कमेंट्स आए –'ओह, आखिरी वक्त में आप फोटो भी नहीं खींच पाए! ''अस्पताल को अंतिम समय पर यादगार के लिए फोटो खींचने देना चाहिए था! "RIP' 'RIP'! 'अंतिम विदाई की फोटो जरूर अपलोड करना'। पिताजी चले गए थे, वो खुश था इतने 'लाइक' और 'कमेंट्स' उसे पहले कभी नहीं आए थे। कुछ खास रिश्तेदार अस्पताल आ गए थे। कुछ एक ने उसे गले लगाया। गले लगते हुए भी बेटा मोबाइल पर कुछ लिख रहा था। बेटा कितना कर्तव्यनिष्ठ था! बाप के जाने के समय भी.... सबको 'थैंक्स टू ऑल' लिख रहा था...!'रिश्ते अपना नया अर्थ खोज चुके थे !'

उपरोक्त सन्देश पढ़ने के बाद मैं यह समझ ही नहीं पा रही कि एक स्वस्थ संवाद के इरादे से जिस दुनिया में प्रवेश किया था, जहां अपनी बात को रख पाने का सुख मिला था, जहां तमाम जाने अनजाने दोस्त मिले थे, जो हमारी बात को हर वक्त सुनने को तत्पर रहते थे कभी लाइक का बटन दबाकर कभी कमेंट करके, वही दुनिया कब बीमारी बनने लगी। आज एक घर में लगभग हर सदस्य के पास मोबाइल फोन है। बल्कि कई बार एक व्यक्ति के पास एक से ज्यादा फोन भी हैं। हर मोबाइल फोन में हर किसी की अपनी दुनिया है। अब यह दुनिया भी हमारे लिए जरूरी बन चुकी है तो क्यों न हम अपने आसपास की दुनिया के साथ–साथ इस आभासी दुनिया में रिश्तों को जोड़ने का प्रयास करें, न कि सिर्फ औपचारिकता निभा देने भर के बारे में सोचें!

साथियों, अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि ये आभासी दुनिया एक शोर–शराबे से भरे चौराहे की तरह है। यहाँ थोडा वक्त बिताएंगे तो अच्छा लगेगा लेकिन अगर वहीँ घर बना कर रहने लगेंगे तो आपकी जिन्दगी औरों की आवाज के शोर में बहरी हो जाएगी, उसे बहरा मत होने दीजिये। अपना समय और अपनी ऊर्जा कुछ बड़ा, कुछ मूल्यवान एवं कुछ शानदार करने में लगाइए और जब आप ऐसा करेंगे तो आपके इस काम को सिर्फ आपके मित्र ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया लाइक करेगी और ऊपर वाला कमेंट देगा।

अंतर्रात्मा की आवाज

* दयानिधी अग्रवाल

आदिकाल में भगवान महादेव को रति के पिता ने यज्ञ में नहीं बुलवाया। रति बहुत जिद करने लगी जाने के लिए और कहने लगी कि पिताजी किसी कारण से भूल गये हैं, फिर तो आप दामाद हैं बिना दामाद के यज्ञ अधूरा हो जायेगा, जरूर चलिए। एक बार तो भगवान जाने के लिए तैयार भी हो गये लेकिन अचानक जाना रोक दिया और रति के जाने के बाद जो घटना घटी उसे सभी जानते हैं।

शायद आपको जानते होंगे कि छतीसगढ़ के चापा जिले में एक मिशन अस्पताल है। वहां एक मैडम को टाइटेनिक में सफर करना था और टिकट भी मिल गया था, लेकिन उन्हीं में से एक दूसरी मैडम को भी अपने परिवारिक कारणों से टाइटेनिक में जाना था, लेकिन उसे टिकट नहीं मिली। इस पर तरस खाकर जिस मैडम को टिकट मिल गई थी, उसने उस दूसरी मैडम को अपनी अंतर्रात्मा की आवाज पर अपना टिकट दे दिया और वह दूसरी महिला टाइटेनिक में चढ़ गई, परन्तु टाइटेनिक के साथ वह भी समुद्र में समा गई।

सभी मानव शरीर में अंतर्रात्मा सक्रिय रहती है और जब कोई कार्य किया जाता है तो अंतर्रात्मा उसे वह कार्य करने या न करने के लिए अवश्य सचेत करती है। यदि वह उस कार्य को अंतर्रात्मा की आवाज पर नहीं करता तो कार्य सम्पन्न नहीं कर पाता। ऐसी कई घटनाएं हुई हैं जिसमें यदि व्यक्ति हवाई सफर/ट्रेन का सफर या अन्य साधनों का प्रयोग करता है, तब अंतर्रात्मा उसे सचेत करती है कि उक्त कार्य को विराम दे या शीघ्र करे।

इस बारे में एक उदाहरण प्रस्तुत है। एक बार वर्षा का मौसम था, आसमान खुला हुआ था और मैं ऑफिस जाने के लिए निकला कि अचानक अंतर्रात्मा की आवाज़ आई कि रेनकोट रख लो, लेकिन मैंने ध्यान नहीं दिया। साफ मौसम होने के बावजूद उस दिन इतनी अधिक वर्षा हुई कि कई घंटे रोड पर बिताने पड़े। ऐसा ही एक और उदाहरण है कि मेरी माँ की तबीयत बहुत खराब थी, डाक्टरों ने जवाब दे दिया कि कभी कुछ भी हो सकता है। रोज की तरह माँ से आशीर्वाद लेकर ऑफिस जाता, दिनभर पत्नी माँ की सेवा करती थी। एक दिन ऑफिस के लिए निकला ही था कि अंतर्रात्मा ने कहा कि आज ऑफिस मत जाओ। कुछ अनर्थ हो सकता है। मैंने ऑफिस से छुट्टी ले ली और मैं माँ के पास ही बैठा रहा। माँ सो रही थी कि अचानक माँ ने हिलना–डुलना बंद कर दिया। मैंने माँ को जगाया लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने नाड़ी को छुआ तो नाड़ी नहीं चल रही थी और वह गहरी सांस ले रही थी। मैंने माँ का सिर गोदी में रखकर जगाने का प्रयास किया कि अचानक उनकी सांस बंद हो गई। डॉक्टर को तुरंत बुलाया तो उन्होंने बताया कि माँ अब नहीं रही। मैं अचम्भे में था कि अचानक यह क्या हो गया? यदि मैंने अंतर्रात्मा की आवाज को नहीं सुना होता और उसे नज़रअंदाज करते हुए ऑफिस चला गया होता तो आज मैं माँ के समीप नहीं रह पाता।

इससे मुझे यह आभास हुआ कि अंतर्रात्मा की आवाज़ अवश्य ही कोई ऐसी आवाज़ है जो हमें भविष्य में होने वाली घटनाओं का संकेत देती है।

* वेअरहाउस सहायक–I, क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

योग

* सच्चिदानन्द राय

आओ मिलकर योग करें. जीवन में प्रयोग करें
स्वस्थ रहने की यह है कुन्जी, मानव तन की पावन पूंजी
सुबह–शाम जो करता योग, उस तन में नहीं लगता रोग
गीता में भगवान की वाणी, हर प्रकार मानव कल्याणी
कर के योग लोग तर जाते, जीवन का अमृत फल पाते
योग से जीवन पावन होता, संतुलित जीवन बन जाता।

21 जून को योग दिवस है, स्वस्थ जीवन का सर्वस है

* प्रबन्धक, सी.एफ.एस., अम्बड–1, नासिक

श्रृद्धा

* वीना दुग्गल

एक गरीब बालक था जो अनाथ था। एक दिन वो एक संत के आश्रम में आया और बोला, बाबा आप सबका ध्यान रखते हैं, मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है तो क्या मैं यहां आपके आश्रम में रह सकता हूं? बालक की बात सुनकर संत बोले, बेटा तेरा नाम क्या है? उस बालक ने कहा मेरा कोई नाम नहीं है। तब संत ने उस बालक का नाम रामदास रखा और बोले कि अब तुम यहीं आश्रम में रहना। रामदास वहीं रहने लगा और आश्रम के सारे काम भी करने लगा। उन संत की आयु 80 वर्ष की हो चुकी थी। एक दिन वो अपने शिष्यों से बोले कि मुझे तीर्थ यात्रा पर जाना है। तुम में से कौन–कौन मेरे साथ चलेगा और कौन–कौन आश्रम में रुकेगा? संत की बात सुनकर सारे शिष्य बोले कि हम आपके साथ चलेंगे! क्योंकि उनको पता था कि यहां आश्रम में रुकेंगे तो सारा काम करना पड़ेगा। इसलिये सभी बोले कि हम आपके साथ तीर्थ यात्रा पर चलेंगे। अब संत सोच में पड़ गये कि किसे साथ ले जायें और किसे नहीं? क्योंकि आश्रम पर किसी का रुकना भी जरूरी था। बालक रामदास संत के पास आया और बोला बाबा अगर आपको ठीक लगे तो मैं यहीं आश्रम में रुक जाता हूं। संत ने कहा ठीक है पर तुझे काम करना पड़ेगा। आश्रम की साफ–सफाई में भले ही कमी रह जाये पर ठाकुर जी की सेवा में कोई कमी मत रखना। रामदास ने संत से कहा कि बाबा मुझे तो ठाकुर जी की सेवा करनी नहीं आती आप बता दीजिये कि ठाकुर जी की सेवा कैसे करनी है? फिर मैं कर दूंगा। संत रामदास को अपने साथ मंदिर ले गये वहां उस मंदिर मे राम दरबार की झांकी थी। श्री राम जी, सीता जी, लक्ष्मण जी और हनुमान जी थे। संत ने बालक रामदास को ठाकुर जी की सेवा कैसे करनी है, सब सिखा दिया। रामदास ने गुरू जी से कहा कि बाबा सेवा करने में आनंद आयेगा। उन संत ने बालक रामदास से कहा कि तू कहता था ना कि मेरा कोई नहीं है तो आज से यह रामजी और सीता जी तेरे माता–पिता हैं। रामदास ने साथ में खड़े लक्ष्मण जी को देखकर कहा, अच्छा बाबा और ये जो पास में खड़े है वो कौन हैं? संत ने कहा ये तेरे चाचा जी हैं और हनुमान जी के लिये कहा की ये तेरे बड़े भैय्या हैं। रामदास सब समझ गया और फिर उनकी सेवा करने लगा। संत शिष्यों के साथ यात्रा पर चले गये। आज सेवा का पहला दिन था रामदास ने सुबह उठकर स्नान किया और भिक्षा मांगकर लाया और फिर भोजन तैयार किया, फिर भगवान को भोग लगाने के लिये मंदिर आया। रामदास ने श्री राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान जी के आगे एक–एक थाली रख दी और बोला अब पहले आप खाओ, फिर मैं भी खाऊंगा। रामदास को लगा कि सच में भगवान बैठकर खायेंगे, पर बहुत देर हो गई रोटी तो वैसी की वैसी थी। तब बालक रामदास ने सोचा नया–नया रिश्ता बना है तो शरमा रहे होंगे। रामदास ने पर्दा लगा दिया बाद में खोलकर देखा, तब भी खाना वैसे का वैसा पड़ा था। अब तो रामदास रोने लगा कि मुझसे सेवा मे कोई गलती हो गई इसलिये खाना नहीं खा रहे और यह नहीं खायेंगे तो मैं भी नहीं खाऊंगा और मैं भूख से मर जाँऊगा इसलिए मैं अब पहाड़ से कूदकर मरने जाऊँगा। रामदास मरने के लिए निकल जाता है, तब भगवान राम जी हनुमान जी को कहते हैं, हनुमान जाओ उस बालक को लेकर आओ और बालक से कहो कि हम खाना खाने के लिये तैयार हैं। हनुमान जी जाते हैं और रामदास कूदने ही वाला होता है कि हनुमान जी पीछे से पकड़ लेते हैं और बोलते हैं क्या कर रहे हो? रामदास कहता है, आप कौन? हनुमान जी कहते हैं, मै तेरा भैय्या हूं इतनी जल्दी भूल गये? रामदास कहता है अब आए हो, इतनी देर से वहां बोल रहा था कि खाना खा लो तब आये नहीं अब क्यों आ गए? तब हनुमान जी बोले पिता श्री का आदेश है, अब हम सब साथ बैठकर खाना खाएंगे। फिर राम जी, सीता जी, लक्ष्मण जी, हनुमान जी, साक्षात बैठकर भोजन करते हैं। इसी तरह रामदास रोज उनकी सेवा करता और भोजन करता। सेवा करते–करते 15 दिन हो गये, एक दिन रामदास ने सोचा कि कोई भी मां–बाप हों वो घर में काम तो करते ही हैं। पर मेरे मां–बाप तो कोई काम नहीं करते, सारे दिन खाते रहते हैं। मैं ऐसा नहीं

* निजी सचिव, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

चलने दूंगा। रामदास मंदिर जाता है और कहता है, पिता जी कुछ बात करनी है आपसे। राम जी कहते हैं बोल बेटा क्या बात है? रामदास कहता है कि अब से मैं अकेले काम नहीं करूंगा। आप सबको भी काम करना पड़ेगा, आप तो बस सारा दिन खाते रहते हो और मैं काम करता रहता हूं, अब से ऐसा नहीं होगा। रामजी कहते हैं तो फिर बताओ बेटा हमें क्या काम करना है? रामदास ने कहा माता जी अब से रसोई आपके हवाले और चाचा जी (लक्ष्मण जी) आप सब्जी तोड़कर लाओगे और भैय्या जी (हनुमान जी) आप लकड़ियां लायेंगे एंव पिताजी (रामजी) आप पत्तल बनाओगे। सबने कहा ठीक है। अब सभी मिलकर काम करते हुए एक परिवार की तरह साथ रहने लगे। एक दिन वो संत तीर्थ यात्रा से लौटे तो सीधा मंदिर में गए और देखा कि मंदिर से प्रतिमाएं गायब हैं। संत ने सोचा कहीं रामदास ने प्रतिमा बेच तो नहीं दी? संत ने रामदास को बुलाया और पूछा भगवान कहां गए? रामदास भी अकड़कर बोला कि मुझे क्या पता रसोई में कहीं काम कर रहे होंगे। संत बोले ये क्या बोल रहा है? रामदास ने कहा, बाबा मैं सच बोल रहा हूं, जब से आप गये हो ये चारों काम में लगे हुए हैं। वो संत भागकर रसोई में गये और सिर्फ एक झलक देखी कि सीता माता जी भोजन बना रही हैं। राम जी पत्तल बना रहे हैं। तभी अचानक वह चारों गायब हो गये और मंदिर में विराजमान हो गये। संत रामदास के पास गये और बोले आज तुमने मुझे मेरे ठाकुर का दर्शन कराया तू धन्य है और संत ने रो–रोकर रामदास के पैर पकड़ लिये। कहने का अर्थ यही है कि ठाकुर जी तो आज भी तैयार हैं, दर्शन देने के लिये पर कोई रामदास जैसा भी तो होना चाहिए।

खेल का मैदान

*** शेख मुहम्मद वसीम**

रहा है और सदा रहेगा तटस्थ
खेल का मैदान

किसी से भी कहाँ पक्षपात करता है
खेल का मैदान

जीतने वालों को तो तालियों से नवाजता है
खेल का मैदान

हारने वालों के लिए आंसू भी बहाता है
खेल का मैदान

जीत हो अगर पानी तो खेल का करो रखो जनून

खेल भावना से ही खेल का रोशन नाम

हर खिलाड़ी को यही सदा देता है खेल का मैदान

हार–जीत तो खेल में होती,

हारो तो भी भूल जाओ, यही कहता है
खेल का मैदान

स्पोर्ट्स मेन स्पिरिट सदा रखो, यही कहता है
खेल का मैदान

काबिल बनो, वतन की शान बढ़ाओ यही कहता है
खेल का मैदान

यही कहता है हर वतन के हर खिलाड़ी को
खेल का मैदान

मेरे उस्ताद जी.ए.शेख की तरह
कभी मैं भी बनूँगा शायर

बार–बार मुझे कह रहा है
दिल का मैदान

तेंदुलकर और पी.टी.ऊषा की तरह
भारत का नाम करो रोशन

यही कहता है भारत का हर
खेल का मैदान।

* वेअरहाउस सहायक–।।, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

जो भूले न जाएं रिश्ते

* विजयपाल सिंह

रोज की तरह यादव जी अपने कार्यालय से घर आए थे। अभी वह जूतों के फीते खोल ही रहे थे कि अचानक उनकी पत्नी शोभा ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा– लो डाक से, आपके भतीजे की शादी का निमंत्रण आया है और यह कहते हुए कार्ड को टेबल पर फेंक दिया तथा गुस्से में कहने लगी– भइया की बहुत तारीफ करते थे। अब तो देख लिया न .....। और कमा कर दे दो, और अपने बच्चों को हाथ में कटोरा देकर सड़क पर भीख मांगने के लिए छोड़ दो।

कुछ समय के लिए तो यादव जी का सर फटने लगा, मगर अपना संतुलन बनाये रखते हुए चुपचाप अपनी पत्नी के व्यंग्यबाण सहता रहा। कार्ड को पढ़कर टेबल पर ही रख दिया।

वास्तव में यादव जी की पत्नी ने जो खरी–खोटी सुनाई वह उसके दिमाग पर हथौड़े की तरह चोट कर रही थी। उन्हें बहुत ही दुख हो रहा था। दुख होता भी क्यों नहीं अपनी जिन्दगी की सारी कमाई भइया–भाभी और उनके बच्चों पर लगाता जो आ रहा था। भाई के घर की प्रत्येक वस्तु उसी ने खरीदवायी थी। यहाँ तक कि इससे पहले दो और भतीजियों की शादी भी करा चुका था। शादी के खर्चे, दहेज इत्यादि का सामान सब यादव जी ने ही खरीदा था।

कुछ समय बाद यादव जी की पत्नी चाय लेकर आती है और यादव जी चाय पीने लगते हैं। वह गुम–सुम बैठा सोचने लगा कि वास्तव में दुनिया बहुत ही स्वार्थी है। फिर यादव जी को यकीन नहीं हो रहा था कि भइया–भाभी ऐसा कर सकते हैं। वह सोच रहा था कि आखिर यह सब कैसे हो गया। भाई के घर शादी हो रही है और मुझे केवल एक कार्ड से ही सूचित किया गया है, वह भी डाक द्वारा। जबकि इससे पहले तो परिवार के सभी सदस्य आया करते थे। आखिर ऐसा बदलाव कैसे आ गया? शायद मुझसे कोई गलती तो नहीं हो गई? और इसी उधेड़–बुन में न जाने यादव जी क्या–क्या सोचते रहे। रात भर यादव जी को नींद भी नहीं आई और अपने बेड पर बड़बड़ाते रहे।

दूसरे दिन यादव जी अपने कार्यालय में पहुँचे और छुट्टी की एप्लिकेशन अपने अधिकारी को दे दी। छुट्टी भी मंजूर हो गई। घर आकर यादव जी शादी में चलने की तैयारी करने लगे। पास की मार्केट से भइया–भाभी और बच्चों के लिए कपडे खरीद कर ले आए और सूटकेस में रख लिए।

यादव जी अगले दिन सपरिवार अपने भइया के घर पहुंच गये। भइया और भाभी के चरण स्पर्श किए, मगर पहले की तरह से वह आशीर्वाद नहीं दिया गया जो भइया–भाभी पहले दिया करते थे। यादव जी को लगा कि भइया का व्यवहार कुछ औपचारिक–सा है। भइया जल्दी ही किसी दूसरे काम में लग गए। यादव जी व उसके बच्चों को किसी ने पानी तक के तक के लिए नहीं पूछा। फिर भी यादव जी यह समझते हुए टाल गए कि शादी वाले घर में सभी व्यस्त तो हो ही जाते हैं। लेकिन यादव जी की पत्नी बीच–बीच में दबी सी आवाज में कोई न कोई व्यंग्यबाण छोड़ ही रही थी, जिससे यादव का बचा हुआ धैर्य भी टूटने लगा।

यादव जी के मन में बार–बार भइया से बात करने की इच्छा हो रही थी, वह मन का गुबार निकालना चाहते थे लेकिन उनके भइया बात करने का मौका ही नहीं दे रहे थे। भाभी का भी तेवर इस बार कुछ और ही नजर आ रहा था।

विवाह–कार्यक्रम समयानुसार संपन्न भी हो गया। यादव जी के मन में जो गुबार समा रहा था, उसे कैसे बाहर निकालें उसी उधेड़–बुन में वह खोया हुआ था। इतने में यादव जी के बच्चे रोते हुए यादव जी के पास आ गए। यादव जी अपने बच्चों को चुप कराने लगे, तभी अन्दर से यादव जी की पत्नी जोर–जोर से चिल्लाते हुए आ धमकी। यादव जी को माजरा समझते देर न लगी, वह चुपचाप जाकर भाभी से बोले– क्या बात है भाभी बच्चे क्यों रो रहे हैं? उसकी बात सुनकर भइया लपककर आए और हाथ पकड़कर यादव जी को बाहर खींचते हुए ले

*कनिष्ठ अधीक्षक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

गए, बोले जो बातें करनी हो वो मुझसे करो, न कि मेरी पत्नी से। इतना सुनकर यादव जी तो सन्न रह गए। दोनों में जोर–जोर से बातें होने के कारण पास–पड़ोस के लोग भी इकट्ठे होने लगे, कुछ रिश्तेदार भी मौजूद थे। कुछ लोग यादव जी की तरफदारी करने लगे तो कुछ उनके भइया–भाभी की। बात तू–तू मैं–मैं पर बढ़ गई। पास में खड़े एक बुजुर्ग ने दोनों को ही समझाने का प्रयास किया, लेकिन इसका भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा, आखिर प्रभाव पड़ता भी तो कैसे? यादव जी के भइया को तो आज अच्छा मौका मिला था। उन्हें आज आर या पार दो में से एक करना ही था। उधर यादव जी के दिल में यह था कि जिनके लिए अपनी जिन्दगी का हर सुख–चैन न्यौछावर किया आज उसका यह परिणाम निकला कि जिन बच्चों की शादी की, वे भी मेरे विरुद्ध हैं।

लोगों की भीड़ से आवाज आई– कल सुबह को पंचायत करा लो भाई। बस इसी बात पर सभी लोग अपने–अपने घर चले गए।

दूसरे दिन पंचायत होने से पहले यादव जी ने जो सामान भइया के यहाँ शादी के लिए खरीदवाया था, उसकी एक कागज पर सूची तैयार करने लगे। रंगीन टी.वी., फ्रिज, कूलर, वाशिंग मशीन, मोटर साइकिल, सोफासेट, डबल बैड इत्यादि। गांव के सभी लोग समय से पहले ही पंचायत में पहुँच गए और पंचायत शुरू हो गई। एक–एक करके दोनों तरफ की बातों को सुना गया। बात बंटवारे तक आ गई। यादव जी ने सफाई दी कि– इस घर का सारा सामान और भतीजियों–भतीजों की शादी में सामान मैंने ही खरीदवाया था। इसका बंटवारा पहले होना चाहिए।

यादव जी के बड़े भइया सामान बांटने के पक्ष में नहीं थे क्योंकि उन्होंने प्रत्येक सामान की पर्ची (केश मेमो) अपने पास बड़ी हिफाज़त से संभालकर रखी हुई थी। उसने सामान की सारी पर्चियों को लाकर पंचायत के सामने पटक दिया और बोला कि घर का सारा सामान इसने नहीं बल्कि मैंने खरीदा है, और सबूत आपके पास है। पंचायत के लोग तो सबूत ही मांगते हैं क्योंकि सबूत के आधार पर ही दूध का दूध और पानी का पानी किया जा सकता है। पर्चियों को ध्यान से देखा तो सभी पर्ची भइया के नाम से ही कटी थीं। यादव जी की आँखें फटी की फटी रह गईं।

यादव जी ने अपने बच्चों और पत्नी को घर भेज दिया तथा खुद सड़क पर कंकरीटों को देखता और आंखों में आंसू लिए स्टेशन तक पहुँच गया। यादव जी को ऐसा सदमा तो माता–पिता के मरने पर भी नहीं हुआ था जैसा आज हुआ। सोचते रहे कि क्या भाई–भाई का रिश्ता भी ऐसा हो सकता है? और लम्बी सांस लेकर बैठ जाते हैं।

शनि-रवि की छुट्टी

*** शशि बाला**

सोमवार आते ही,
हो जाता है शुरू, इंतजार शनि–रवि की छुट्टी का।
ढेरों काम पड़े हैं घर के, जिन्हें है निपटाना,
बच्चों की फरमाईश है हमें है घूमने जाना।
पति महोदय चाहते हैं, किसी रिश्तेदार के घर 'मेरे साथ' है जाना,
सास–ससुर का हॉस्पीटल में है हैल्थ चेकअप कराना।

बिलों को भरना, मार्केट जाना,
घर की साप्ताहिक सफाई है करना,
इन्हीं उलझनों में.....
शनि–रवि कब आया, कब गया, पता न चल पाया,
केवल अपने लिए ही समय न मिल पाया।

लेकिन, अगले शनि–रवि की छुट्टी में
अपनी पसंद का काम है कुछ करना,
इसी उम्मीद में, फिर से....
सोमवार आते ही,
हो जाता है शुरू, इंतजार शनि–रवि की छुट्टी का।

* हिंदी अनुवादक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

पर्यावरण हमें बचाना है!

* अरविन्द सनत् कुमार

आओ हम संकल्प करें,
पर्यावरण हमें बचाना है।
चाहे छोटे हों, या बड़े शहर,
रोज घुल रहा, कडुवा ज़हर।
हजारों, लाखों वाहन चल रहे,
डीज़ल और पेट्रॉल, जल रहे।
ग्लोबल वार्मिंग, ग्लोबल वार्मिंग,
मचा हुआ है शोर।
पूरी दुनियां में चहुं ओर!!
जब आती सूनामी वार्निंग,
तब चले न कोई जोर!!
प्रकृति से छेड़छाड़ का,
ये है देखो शंघाई तक
भुगत रहे अंजाम!!
अब तो दुनियांवालो जागो,
भोगवाद के पीछे मत भागो।
पेड़–पौधों की हरियाली
जल, जमीन और जंगल।
सबको हमें बचाना है
तभी होगा हम सब का मंगल।।
ये धरती हमारी माता है,
इससे युगों युगों का नाता है।
इस धरती को हमें बचाना है,
इसे शस्य–श्यामला बनाना है।
अगर देश को आज की प्रदूषणवाली
दिल्ली नहीं बनाना है; तो
आओ हम संकल्प करें, पर्यावरण.....

भारत को स्वच्छ बनाना है,
कूड़ा कचरा निपटाना है।
रसायनिक उर्वरक नहीं,
अब जैविक खाद बनाना है।।
सिक्किम से शुरूआत हुई,
ये संदेश हमें फैलाना है।
आओ हम संकल्प करें.....
घर से लेकर कार्यालय तक
जमींन से लेकर आसमान तक
गली मोहल्ले से लेकर
एवरेस्ट और अंतरिक्ष तक
हमें प्रकृति से प्रेम बढ़ाना है।
आओं हम संकल्प करें.....
पर्यावरण हमें बचाना है।

ये गंगा–यमुना क्यों मैली?
उद्योगों की भरती थैली।
चहुं ओर गंदगी है फैली।।
क्या अपना कोई फर्ज़ नहीं?
जिसका इलाज असंभव हो,
है ऐसा कोई मर्ज़ नही।
अपने घर से शुरूआत करें,
तुलसी–बिरवा'' की बात करें।
वायुमण्डल में–
कार्बन–डाई–ऑक्साईड को कम करके
ऑक्सीजन हमें बढ़ाना है।
स्वच्छ ऊर्जा से हरियाली बढ़ाकर
''ओजोन परत'' को खतरे
से बचाना है; तो
आओ हम संकल्प करें,
पर्यावरण हमें बचाना है।

* प्रबंधक, सैन्ट्रल वेअरहाउस, सांगली

श्री सोमनाथ दर्शन

* आई.एम. वर्मा

मेरे द्वारा सोमनाथ मंदिर का पहली बार दर्शन करने के पश्चात् वहां की विशेषता का संक्षिप्त विवरण मैं अपने भावों के साथ प्रकट कर रहा हूं एवं उसमें होने वाली त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

भारत के पश्चिम में गुजरात राज्य के सौराष्ट्र प्रान्त के वेरावल के समीप महासागर के तट पर सोमनाथ मंदिर स्थित है जो 12 आद्या ज्योतिर्लिंगों में एक है, इस स्थान को प्रभास तीर्थ के नाम से भी जाना जाता है। प्रभास में ही कृष्ण एवं बलदेव जी ने भौतिक देह त्याग कर बैकुंट गमन किया था। प्रभास समुद्र तट पर स्थित होने के कारण समशीतोष्ण जलवायु प्रधान है, जहां ग्रीष्म ऋतू में भी शीतलता रहती है।

इसका रेलवे स्टेशन वेरावल है जो प्रभास तीर्थ से 6 कि.मी. की दूरी पर है और सोमनाथ रेलवे स्टेशन भी है। प्रभास से 5–6 घन्टे में भगवान श्री कृष्ण के द्वारका नगरी बस द्वारा पहुंचा जा सकता है। वैकुंठ गमन के पूर्व श्री कृष्ण प्रभास पधारे थे, यादवों का आपसी संग्राम–संहार भी प्रभास में ही हुआ था। श्री कृष्ण के शरीर त्याग करते ही द्वारका नगरी समुद्र में विलीन हो गयी थी। यादवों के संहार के बाद श्री कृष्ण पीपल वृक्ष के शाखा पर दाँए पांव पर बाँया पांव रख कर बैठे गए, तब पारधी नाम के बहेलिये ने श्री कृष्ण के पैर तलवे के पदम् को हिरन की आंख समझ कर धनुष से बेध दिया एवम इसे ही निमित बना कर श्री कृष्ण ने देह त्याग कर दिया। उस पेड़ पर बैठे श्री कृष्ण की मूर्ति के सामने बहेलिये की मूर्ति आज भी विध्यमान है। जहां पर बाण मारा था वह स्थान भालका तीर्थ कहलाता है। जिसको देख कर मन बिहवले हो जाता है। वहां से 3–4 कि.मी. दूर सरिता तट पर जहां भगवान श्री कृष्ण का अंतिम संस्कार किया है। आज भी पद चिन्ह विद्यमान है एवम् एक भव्य मंदिर भी है जिसमें श्री कृष्ण की आदमकद प्रतिमा है। इस मंदिर में गीता के 18 अध्याय लिखे हैं जिसे गीता मंदिर भी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि श्री कृष्ण के देह त्याग के पश्चात् बलराम जी ने अपना नर रूप बदल कर शेषनाग के रूप में अतल पाताल में प्रवेश कर चले गए। यह स्थान बलदेव जी की गुफा गीता मंदिर के दायें भाग में है। गुफा के भीतर बलराम जी की प्रतिमा हल धारण किये हुए है। गुफा के भूभाग में दीवार के ऊपर शेषनाग की मूर्ति दर्शन हेतु विद्यमान है। यहाँ प्रभास में ही मुसलमान, बुद्धों एवम जैनियों के भी पवित्र स्थान विद्यमान है।

इस प्रभास क्षेत्र यानि सोमनाथ एवम् आस–पास के महाभारत काल के पौराणिक अवशेषों को देख कर मन विचलित हो उठता है एवम् सोचने पर मजबूर कर देता है कि कहाँ मथुरा वृन्दावन एवम् कहाँ भलका तीर्थ कहा बलराम गुफा जहां पर इन देव शक्तियों का महाभारत में मुख्य भूमिका रही है अंत समय कहाँ एवम् कैसे बीता, सोचने को मजबूर करता है एवम् गहराई में जाने का जी करता है ताकि अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त हो सके।

अंत में इस लेख को पढ़ने के पश्चात् मुझे उम्मीद है कि हमारे कर्मचारी एवम् अधिकारी सोमनाथ एवम् द्वारकापुरी का दर्शन जरूर करेंगे।

* अधीक्षक, सैन्ट्रल वेअरहाउस, आणंद

निगमित कार्यालय में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला एवं भंडारण भारती पत्रिका का विमोचन

निगमित कार्यालय में दिनांक 14.06.2016 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर निगम के प्रबंध निदेशक, निदेशक (वित्त), निदेशक (कार्मिक), निदेशक (एमसीपी) तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रबंध निदेशक महोदय सहित सभी उच्च अधिकारियों ने राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए अपने विचार प्रस्तुत किए। इस कार्यशाला में निगमित कार्यालय तथा डब्ल्यूडीआरए के प्रतिभागी भी शामिल हुए।

इसके अतिरिक्त, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 29.06.2016 को आयोजित बैठक के अवसर पर त्रैमासिक पत्रिका भंडारण भारती (अंक–60) का विमोचन किया गया। इस अवसर पर प्रबंध निदेशक, निदेशक (कार्मिक), निदेशक (एमसीपी) तथा मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य श्री अजय कुमार उपस्थित थे।

कॉस्ट मैनेजमेंट में श्रेष्ठता पुरस्कार

केन्द्रीय भंडारण निगम को इंस्टीट्च्यूट ऑफ कॉस्ट एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इंडिया द्वारा 28 मई, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित समारोह में पब्लिक–सर्विस सैक्टर (मीडियम) श्रेणी के अन्तर्गत कॉस्ट मैनेजमैन्ट में श्रेष्ठता के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार सीबीईसी के अध्यक्ष श्री नजीब शाह ने प्रदान किया। केन्द्रीय भंडारण निगम के निदेशक (वित्त) श्री वी.आर. गुप्ता तथा निदेशक (कार्मिक) श्री जे.एस.कौशल एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने यह पुरस्कार प्राप्त किया। यह पुरस्कार केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा अपनाए गए कॉस्ट अकाउन्टिंग सिस्टम एवं प्रावधानों की प्रभावशीलता को प्रमाणित करता है।

सीएसआर के अधीन कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

निगम के प्रबंध निदेशक द्वारा एनबीसीएफडीसी के प्रबंध निदेशक की उपस्थिति में सीआईपीईटी, मुरथल हरियाणा में कमजोर अन्य पिछड़ा वर्ग युवाओं के लिए दिल्ली में 05 मई, 2016 को कौशल विकास कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

पटना में सेमिनार और प्रदर्शनी

माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री रामविलास पासवान दिनांक 17.05.16 को पटना में आयोजित सेमिनार एवं प्रदर्शनी के अवसर पर उपस्थित हुए। इस मौके पर केन्द्रीय भंडारण निगम के प्रबंध निदेशक श्री हरप्रीत सिंह तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

प्रतिष्ठित सीआईओ पुरस्कार

केन्द्रीय भंडारण निगम के श्री ए.एम.राव, महाप्रबंधक (प्रणाली) को दिनांक 13 मई, 2016 (शुक्रवार) को नई दिल्ली में साइबर सिक्युरिटी, 2016 पर डिजिटल ऐज कॉन्क्लेव के दौरान डिजिटल ऐज पत्रिका द्वारा भारत का प्रतिष्ठित सीआईओ पुरस्कार प्रदान किया गया।

प्रसिद्ध साइबर सिक्युरिटी विधि विशेषज्ञ श्री पावल दुग्गल द्वारा सरकारी, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, कारपोरेट्स एवं कम्पनियों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में पुरस्कार स्वरूप प्रमाण पत्र एवं ट्राफी प्रदान की गई।

क्षेत्रीय कार्यालय, बैंगलूरू में कार्यनिष्पादन समीक्षा बैठक एवं ट्रेड मीट

माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री रामविलास पासवान ने दिनांक 13.06.2016 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू की कार्यनिष्पादन की समीक्षा की। इस अवसर पर राज्य के खाद्य मंत्री श्री दिनेश गुण्डु राव एवं क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सेमुअल प्रवीण कुमार उपस्थित थे।

दिनांक 17.06.2016 को सीएसएफ व्हाइट फील्ड बेंगलूरू में ट्रेड मीट का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रबंधक, बेंगलूरू, प्रबंधक सीएसएफ व्हाइट फील्ड सहित क्षेत्रीय प्रबंधक, चैन्नई भी उपस्थित थे।

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिन्दी कार्यशाला

fofHkUu miØeksa ds vf/kdkfj;ksa ds lkFk lrdZrk ikB~;Øe ds nkSjku fuxfer dk;kZy; ds lrdZrk vf/kdkfj;ksa dk lkewfgd fp=

स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन

निगम में स्वच्छता पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस स्वच्छता पखवाड़े के दौरान कार्यालय बिल्डिंग तथा वेअरहाउसों की स्वच्छता एवं हाइजीन, पुराने रिकार्डों की वीडिंग आउट, सभी शौचालयों में सैनिटाइजर डिस्पेन्सर लगाना, कर्मचारियों के बच्चों के लिए 'स्वच्छता के महत्व' पर ड्राईंग प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त निगमित कार्यालय में रक्तदान शिविर भी लगाया गया जिसमें अधिकारियों एंव कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ का भाग लिया।

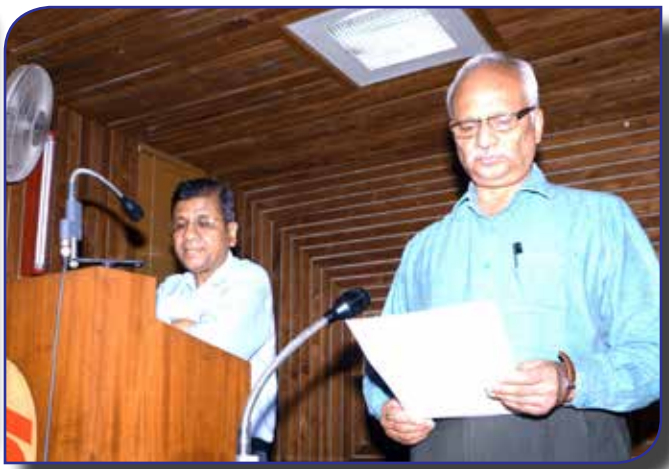

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम

निगमित कार्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालयों में अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें योग के बारे में विभिन्न जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रियता से भाग लेकर योगाभ्यास किया।

निगम द्वारा आयोजित विभिन्न खेल गतिविधियाँ

*राजीव विनायक

निगम द्वारा विभिन्न कार्यकलापों सहित खेल गतिविधियों को बढ़ाने पर बल दिया जाता है। पूर्व की भांति निगम की क्रिकेट, टेबल टेनिस एवं बैडमिंटन टीमों ने प्रतियोगिता में भाग लिया और सफलता प्राप्त की जिसकी विस्तृत रिपोर्ट इस प्रकार है:

बैडमिंटन

केन्द्रीय भण्डारण निगम की बैंडमिंटन टीम ने आल इण्डिया पब्लिक सैक्टर बैडमिंटन टूर्नामेंट में पुरुष और महिला वर्ग में भाग लिया तथा दोनों ही कार्यक्रमों में छात्रवृति प्राप्त खिलाडियों श्री शुभम गुसांई, ऋषभ सहदेव, जयंक आहूजा, हर्षित टेकचंदानी, संस्कृति छाबड़ा, जागृति नासिर, यामिनी शर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

क्रिकेट

1. केन्द्रीय भण्डारण निगम की टीम द्वारा साहिबजादा अजीत सिंह क्रिकेट टूर्नामेंट जनवरी, 2016 में दिल्ली में खेला गया तथा टीम सेमीफाइनल में पहुंची।
2. केन्द्रीय भण्डारण निगम की टीम फरवरी, 2016 में सत्यवती कॉलेज, नई दिल्ली में खेले गए संदीप सूरी मैमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुंची।
3. केन्द्रीय भण्डारण निगम की टीम ने मार्च, 2016 में अखिल भारतीय पब्लिक सैक्टर क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग लिया।
4. केन्द्रीय भण्डारण निगम की टीम ने डीडीसीए लीग टूर्नामेंट में भाग लिया।
5. केन्द्रीय भण्डारण निगम की टीम सेंट स्टीफन कॉलेज ग्राउंड में अप्रैल, 2016 में लक्ष्मण दास क्रिकेट टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुंची।
6. केन्द्रीय भण्डारण निगम की टीम गोस्वामी गणेश दत्त क्रिकेट टूर्नामेंट में मई, 2016 में प्री क्वार्टर फाइनल में पहुंची।

टेबल टेनिस

1. दिल्ली में आयोजित राज्य रैंकिग टी.टी. टूर्नामेंट में सुश्री कृतिका मलिक और सुश्री सृष्टि गुप्ता विजेता और उपविजेता रहीं।
2. श्री सुशील टेकचंदानी ने मई, 2016 में स्पेन में आयोजित वर्ल्ड वेट्रन टी.टी. चैम्पियनशिप में भाग लिया और जर्मनी, स्लोवेनिया, जापान और बेल्जियम के खिलाडियों को हराया।

*खेल सचिव, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

स्वच्छता शपथ

महात्मा गांधी ने जिस भारत का सपना देखा था उसमें सिर्फ राजनैतिक आजादी ही नहीं थी बल्कि एक स्वच्छ एवं विकसित देश की कल्पना भी थी।

महात्मा गांधी ने गुलामी की जंजीरों को तोड़कर माँ भारती को आजाद कराया।

अब हमारा कर्तव्य है कि गंदगी को दूर करके भारत माता की सेवा करें।

मैं शपथ लेता हूँ कि स्वयं स्वच्छता के प्रति सजग रहूँगा और उसके लिए समय दूँगा।

हर वर्ष 100 घंटे यानी हर सप्ताह 2 घंटे श्रमदान करके इस संकल्प को चरितार्थ करूँगा।

मैं न गंदगी करूँगा, न किसी और को करने दूंगा।

सबसे पहले मैं स्वयं से, मेरे परिवार से, मेरे मुहल्ले से, मेरे गांव से एवं मेरे कार्यस्थल से शुरूआत करूँगा।

मैं यह मानता हूँ कि दुनिया के जो भी देश स्वच्छ दिखते हैं, उसका कारण यह है कि वहाँ के नागरिक गंदगी नहीं करते और न ही होने देते।

इस विचार के साथ मैं गांव–गांव और गली–गली स्वच्छ भारत मिशन का प्रचार करूँगा।

मैं आज जो शपथ ले रहा हूँ, वह अन्य 100 व्यक्तियों से भी करवाऊँगा।

वे भी मेरी तरह स्वच्छता के लिए 100 घंटे दें, इसके लिए प्रयास करूँगा।

मुझे मालूम है कि स्वच्छता की तरफ बढ़ाया गया मेरा एक कदम पूरे भारत देश को स्वच्छ बनाने में मदद करेगा।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,

अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,

नई दिल्ली–110016